

सम्पादक
डॉ० हारून रशीद सिद्दीकी
सहायक
मु० गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं० 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ - 226007
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विदेशों में (वार्षिक) 30 युएस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
“सच्चा राही”
पता
पोस्ट बॉक्स नं० 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ-226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन
द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से
मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे
सहायत व नशरियात नदवतुल
उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

अक्तूबर, 2016

वर्ष 15

अंक 08

हज़रते हुसैन रज़ियल्लाहु अ़नहुमा

हज़रत हुसैन, हुसैन, वह प्यारे नबी के हैं
हज़रत हुसैन, हुसैन, वह प्यारे अली के हैं
हैं फ़ातिमा के लाल, वह दोनो हुसैन, हुसैन
खुलफ़ाए राशिदीन के प्यारे हुसैन हुसैन
उम्मत को हैं महबूब यह दोनों हुसैन हुसैन
ज़िन्दा हैं वह शहीद हैं, दोनों हुसैन हुसैन
अल्लाह उन से राज़ी है, वह उस से हैं राज़ी
महबूब उनको जो भी है, रब उस से है राज़ी
या रब नबीये पाक पर हरहमत का हो नुज़ूल
मिदहत हुसैन हुसैन की या रब हो यह क़बूल।।

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा.....	मौ० बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	05
मुहर्रम का महीना.....	डॉ० हारून रशीद सिद्दीकी	07
दीने इस्लाम का मिज़ाज	ह० मौ०सै० अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०	12
नई पीढ़ी के निर्माण में माँ	मौ० डॉ० सईदुरहमान आजमी नदवी	14
जनता की चिन्ता.....	मौलाना नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	19
आपके प्रश्नों के उत्तर.....	मुफ़ती ज़फ़र आलम नदवी	20
पर्यावरण की सुरक्षा	एक छात्रा	22
बोरण्डी में इस्लाम	वसी अहमद नदवी	25
अमीरुल मोमिनीन अब्दुल्लाह	इदारा	28
व्यायाम (वर्जिश)	इदारा	33
मुझे आखिरत (प्रलोक) तक	मौ० अशरफ़ अली थानवी रह०	36
रिसालत, ख़िलाफ़त.....	इदारा	38
भारत देश, वतन और ईमान.....	इदारा	39
उर्दू सीखिए.....	इदारा	40

कुआन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी

सूर-ए-आले इमरान:

अनुवाद- बेशक जिन्होंने कुफ्र किया उनका धन और उनकी संतान अल्लाह के आगे उनके कुछ भी काम न आएंगे और वही लोग दोज़ख वाले हैं, उसी में वे हमेशा रहेंगे(116) वे दुन्या के जीवन में जो कुछ भी खर्च करते हैं उसका उदाहरण ऐसा है जैसे एक हवा हो, उस में पाला हो, वह उन लोगों की खेती को मार जाए जिन्होंने अपनी जानों पर अत्याचार कर रखा है फिर वह उसको बर्बाद कर जाए और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया वे खुद अपने ऊपर अत्याचार करते हैं⁽¹⁾(117) ऐ ईमान वालो! अपने अलावा किसी अन्य को भेदी मत बनाओ वे तुम्हारी तबाही के लिए कोई कमी नहीं करते, तुम जितनी भी कठिनाई में पड़ जाओ यही उनकी चाहत है, उनकी ज़बानों से बुग्ज़ (द्वेष) फूट पड़ता है और उनके सीनों में

जो कुछ छिपा हुआ है वह इससे बढ़ कर है, हमने तुम्हारे लिए निशानियां खोल दी हैं अगर तुम बुद्धि से काम लेते जाओ⁽²⁾(118) अच्छी तरह सुन लो! तुम उनसे प्रेम रखते हो और वे तुम से प्रेम नहीं करते और तुम सारी किताबों पर ईमान रखते हो⁽³⁾ और वे जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान वाले हैं और जब अलग होते हैं तो क्रोध में तुम पर उंगलियां काट-काट खाते हैं आप कह दीजिए कि अपनी दुश्मनी में खुद ही मरो, अल्लाह दिलों की बातों को खूब जानता है(119) अगर तुम्हें मलाई प्राप्त होती है तो उन्हें बुरा लगता है और अगर तुम पर कोई बुराई पड़ती है तो वे खुश होते हैं और अगर तुम सब्र व तकवे पर कायम रहे⁽⁴⁾ तो उनकी कोई चाल तुम्हें ज़रा भी नुकसान नहीं पहुंचा सकती बेशक जो कुछ भी वे

करते हैं सब अल्लाह की शक्ति के घेरे में है(120) और (वह समय याद कीजिए) जब आप अपने घर वालों के पास से सुबह को निकले मुसलमानों को जंग के ठिकानों पर ठहराते हुए और अल्लाह खूब सुनने वाला और खूब जानने वाला है⁽⁵⁾(121) और जब तुम में दो गिरोह सोचने लगे थे कि वे हिम्मत हार जाएं⁽⁶⁾ जब कि अल्लाह ही उनकी सहायता करने वाला था, और ईमान वालों को चाहिए कि वे अल्लाह ही पर भरोसा करें(122) और अल्लाह ने बद्र में भी तुम्हारी सहायता की थी हालांकि तुम बेहैसियत थे तो तुम अल्लाह का लिहाज़ करते रहो ताकि तुम शुक्र करने वाले बन जाओ⁽⁷⁾(123) और जब आप मुसलमानों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए यह काफ़ी नहीं कि अल्लाह तीन हज़ार फरिश्ते उतार कर तुम्हारी

सहायता करे(124) हां अगर तुम जमे रहे और परहेज़गार रहे और वे (दुश्मन) अचानक उसी समय तुम पर हमलावर हुए तो तुम्हारा पालनहार ऐसे पांच हजार फरिश्तों से तुम्हारी सहायता करेगा जो (विशिष्टा) का चिन्ह रखते होंगे(125) और यह तो अल्लाह ने तुम्हारी खुशखबरी के लिए किया और इसलिए ताकि इससे तुम्हारे दिलों को सुकून मिले और सहायता तो केवल अल्लाह ही के पास से है जो ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हिकमत (तत्त्वदर्शिता) रखता है⁽⁹⁾(126) ताकि काफ़िरों के एक गिरोह को समाप्त कर दे या उनको अपमानित कर दे तो वे नाकाम वापस हों⁽¹⁰⁾(127) आपको इसमें कोई अधिकार नहीं अल्लाह चाहे उनको तौबा से सम्मानित करे या चाहे तो अज़ाब दे, हैं तो निःसंदेह अत्याचारी⁽¹⁰⁾(128) आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह अल्लाह ही का है जिसको चाहे माफ़ कर दे और जिसको चाहे अज़ाब दे और अल्लाह तो बड़ा क्षमा

करने वाला अति दयालु है(129) ऐ ईमान वालो! बढ़ा-चढ़ा कर ब्याज मत खाओ और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम कामयाब हो जाओ⁽¹¹⁾(130) और उस आग से बचाव का उपाय करो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है(131) और अल्लाह और पैग़म्बर की बात मानो ताकि तुम पर दया की जाए(132)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. जो लोग दुनिया में पैसे लगाते हैं वह किस तरह बर्बाद हो जाता है उसका उदाहरण दिया जा रहा है।

2. यह अल्लाह का इनकार करने वाले चाहे ज़बान से कैसी ही दोस्ती का दम भरें लेकिन यह कभी मुसलमानों के दोस्त नहीं हो सकते, उनके अन्दर इतना द्वेष भरा हुआ है कि वे कोई मौका हाथ से खाली नहीं जाने देते और उनकी ज़बानों से यह प्रकट हो जाता है।

3. तुम उन की आसमानी किताबों को मानते हो और वे

तुम्हारी किताब को नहीं मानते, इसका परिणाम तो यह होना चाहिए था कि उनके दिलों में तुम्हारे लिए नरम कोना होता मगर मामला इसके उलट है।

4. सब्र व तक्वा सुरक्षा व सफलता के दो ज्वलंत विषय हैं, सब्र यानी हर प्रकार की अडिगता और तक्वा यानी हर प्रकार की परहेज़गारी।

5. यहां से ग़ज़्व-ए-उहद का उल्लेख है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब के स्थान निर्धारित कर रहे थे कि कौन कहां खड़ा होगा।

6. मुनाफ़िकों का सरदार अचानक तीन सौ संख्या को लेकर अलग हो गया, इससे दो कबीलों बनू सलमा व बनू हारिसा ने कुछ कमज़ोरी महसूस की लेकिन अल्लाह ने जल्द ही उनके दिलों को जमा दिया।

7. बद्र युद्ध का उदाहरण दे कर समझाया जा रहा है एक ही साल पहले की बात थी, उस अवसर पर मुसलमानों की संख्या कम होने के बावजूद बहुत

शेष पृष्ठ06...पर..

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

संक्षेप बात:-

हजरत सुफयान बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि मैं ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप मुझे ऐसे काम की बात बताइये जिसको मैं मजबूती से पकड़ लूँ, आप ने फरमाया कहो मेरा रब अल्लाह है फिर उस पर कायम रहो, मैं ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप को मेरे लिए सब से ज़ियादा किस चीज़ का खतरा महसूस होता है। आप ने अपनी ज़बाने मुबारक पकड़ कर फरमाय इस से। (तिर्मिजी)

यही, यानी ज़बान ही वह चीज़ है जिस से ज़ियादा तर गुनाह हो जाते हैं, हराम खाने का भी इस से डर है और अल्लाह की नाराजगी के वाक्य के बोलने का भी इस से डर है।

ज़ियादा बोलना:-

हजरत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम अल्लाह के जिक्र के अलावा ज़ियादा बात न किया करो, ज़ियादा बोलना दिल को सख्त कर देता है और सख्त दिल आदमी अल्लाह से बहुत दूर है। (तिर्मिजी)

हजरत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फरमाया जिस शख्स की ज़बान और गुप्तांगों को अल्लाह ने बुराई से बचा लिया वह जन्नत में दाखिल होगा। (तिर्मिजी)

सलामती का रास्ता:-

हजरत उक़बा बिन आमिर रज़ि० से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा या रसूलुल्लाह किस बात से नजात हासिल हो सकती है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अपनी ज़बान को रोको, और घर तुम्हारे लिए काफी हो (यानी अपनी ज़बान की

बुराई से लोगों को बचाने के लिए घर में बैठे रहना चाहिए) और अपनी गलतियों पर रोया करो। (तिर्मिजी)

ज़बान की अहमियत:-

हजरत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर सुबह को इंसान के तमाम अंग ज़बान के आगे आजिज़ी करते हैं, कहते हैं खुदा के लिए हमारे बारे में अल्लाह से डरो, अगर तू सीधी है तो हम भी सीधे रहेंगे, अगर तू टेढ़ी है तो हम भी टेढ़े रहेंगे। (तिर्मिजी)

भलाई के दरवाजे:-

हजरत मुअज़ रज़ि० से रिवायत है कि मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप मुझे ऐसा अमल बताइये जो मुझे जन्नत का हकदार बना दे और दोज़ख से महफूज रखे, आप ने फरमाया तुम ने बड़ी अच्छी

बात पूछी है यह काम अल्लाह तआला जिस पर आसान कर दें तो आसान हैं, वह काम यह हैं, तुम अल्लाह की इबादत करो उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ, नमाज़ पढ़ो, रमजान के रोज़े रखो, और खान-ए-काबा की इस्तिताअत हो तो हज करो, फिर फरमाया मैं तुम को भलाई के रास्तों की खबर दूँ, सुनो रोज़ा ढाल है, (अर्थात् यह गुनाह और दोज़ख़ से बचाता है) और सद्का गुनाहों को इस तरह बुझाता है जिस तरह पानी आग को बुझाता है और आधी रात को उठ कर नमाज़ पढ़ना (यानी तहज्जुद की) फिर आप ने कुर्आन की यह आयत पढ़ी अनुवादः उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं और अपने रब को डर और उम्मीदवारी से पुकारते हैं और हमारे दिये हुए में से खर्च करते हैं, तो कोई नहीं जानता जो उनके लिए आंखों की ठंडक छुपा रखी है, उन आमाल के बदले में जो वह करते हैं।

(सूरः अलिफ लाम मीम सजदः2)

ज़बान की दौलतः-

फिर फरमाया मैं तुम को दीन का सर और उसका सुतून और उसके कोहान की बलन्दी बता दूँ, मैं ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाइए, आप ने फरमाया दीन का सर इस्लाम है कि बगैर इस्लाम के दीन का वजूद नहीं, जिस तरह बगैर सर के बदन बेकार है, और उसका सुतून नमाज़ है और उसके कोहान की बलन्दी जिहाद है, फिर फरमाया क्या मैं तुम को उन की जड़ बताऊँ, मैं ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाइये ,आप ने अपनी ज़बान मुबारक को पकड़ कर बताया इसको रोको, मैं ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या हमारी बात चीत पर भी हमारी पूछ-ताछ होगी फरमाया तेरी माँ तुझ को रोये, लोग आग में चेहरों के बल अपनी ज़बान की बदौलत गिराये जायेंगे। (तिर्मिजी)



—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा

ज़ियादा सब्र व तकवे के कारण अल्लाह ने कैसी सहायता की, तीन सौ तेरह के मुकाबले में एक हज़ार पराजित हो गए।

8. फरिश्तों को भेजने की खबर भी इसलिए दी गई ताकि मुसलमानों को इत्मिनान हो जाए वरना अल्लाह को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, अल्लाह का फ़ैसला अकेले काफ़ी था।

9. ब्रद का ही चित्रण किया जा रहा है जिसमें चुन-चुन कर बदमाश काफ़िर क़त्ल किए गए, बाकी अपमानित हो कर वापस हुए।

10. अल्लाह जिस को चाहे काफ़िर होने की हालत में मौत दे और अज़ाब दे।

11. हराम होने से पहले मुसलमान ब्याज का लेन-देन कर लिया करते थे, यहां पूरे तौर पर उनको समाप्त करने का आदेश दिया जा रहा है, गज़वों (जंगों) के साथ इसका इसलिए भी उल्लेख है कि ब्याज खाने से दुस्साहस व कंजूसी बढ़ती है।

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

मुहर्रम का मुबारक महीना

—डॉ० हारून रशीद सिद्दीकी

मुहर्रम हिज्री सन का पहला महीना है, इस को मुहर्रमुल हराम भी कहते हैं, यहां हराम का अर्थ है सम्मानित, प्रतिष्ठित, मुहर्रमुल हराम अर्थात् सम्मानित मुहर्रम अथवा प्रतिष्ठित मुहर्रम पवित्र कुआँन में आया है, अल्लाह ने वर्ष के बारह महीने बनाए हैं उन में से चार महीने प्रतिष्ठित हैं।

(सू-रए-तौबा)

रिवायात में उन चार महीनों के नाम यह बताए गये हैं, मुहर्रम, रजब, ज़ीकादा, ज़िल्हिज्ज, अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने से पहले भी अरब देशों में यह चारों महीने सम्मानित थे, अरब लोग इन महीनों में युद्ध को वर्जित समझते थे और इन महीनों का आदर करते थे। अल्लाह के नबी ने भी इन महीनों को सम्मानित घोषित किया। इस महीने की 10 तारीख बड़ी प्रतिष्ठित है। इस 10 मुहर्रम को आशूरा कहते हैं। इस दिन अल्लाह की ओर से बड़े

महत्वपूर्ण कार्य समपन्न हुए हैं जो रिवायात में सुरक्षित हैं सबसे प्रसिद्ध घटना उन में से यह है कि 10 मुहर्रम को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिए समुद्र में सूखे रास्ते बना दिये गये थे और वह बनी इस्राईल को ले कर समन्दर पार कर गये थे और उनका पीछा करने वाला अत्याचारी फिरऔन जैसे ही अपनी सेना के साथ समन्दर के रास्ते में पहुंचा समन्दर का रुका पानी मिल गया और वह अपनी सेना के साथ डूब गया। फिरऔन ने जब अल्लाह का अज़ाब देखा तो कहने लगा मैं बनू इस्राईल के रब पर ईमान लाया, लेकिन जब अज़ाब दिख जाये तो उस समय ईमान स्वीकार नहीं होता अतः उसका ईमान स्वीकार नहीं हुआ, अलबत्ता उस का शव लोगों के सबक के लिए बाहर निकाल दिया गया जो आज भी किसी संग्राहलय में सुरक्षित है। इस घटना का उल्लेख पवित्र कुआँन में सू-रए-यूनुस में विद्यमान है।

जब अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत करके मदीना मुनव्वरा आये तो उन को बताया गया कि मदीने के यहूदी 10 मुहर्रम को रोज़ा रखते हैं, उन से इसका सबब पूछने पर उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम के नजात पाने और फिरऔन के डूबने की बात बताई और कहा कि उसके शुक्रिये में हम लोग रोज़ा रखते हैं। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हम यहूदियों से ज़ियादा इस बात के हकदार हैं कि दस मुहर्रम को रोज़ा रखें अतएव नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 10 मुहर्रम को रोज़ा रखा और सहाबा को 10 मुहर्रम को रोज़ा रखने का आदेश दिया, रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ होने से पहले तक आशूरा (10 मुहर्रम) का रोज़ा फ़र्ज़ रहा, जब रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुए तो आशूरा का रोज़ा सुन्नत हो गया। तो आप और आप के सहाबा 10 मुहर्रम का रोज़ा रखते

सच्चा राही अक्टूबर 2016

रहे। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने अन्तिम समय में कहा कि यदि मैं जीवित रहा तो अगले मुहर्रम में 10 मुहर्रम के साथ एक दिन मिला कर रोज़ा रखूंगा ताकि हमारे और यहूद के रोज़े में अन्तर हो जाए, परन्तु अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अगला मुहर्रम न मिल सका परन्तु नबी के इस कथन की बिना पर सहाबा 9,10 अथवा 10,11 मुहर्रम को रोज़ा रखते रहे, इस लिए आलिमों ने लिखा है कि केवल 10 मुहर्रम को रोज़ा रखना मकरूहे तन्जीही है। अतः 10 मुहर्रम के साथ एक दिन मिला कर रोज़े रखना चाहिए। अगर दो दिन रोज़ा रखने में कठिनाई हो तो 10 मुहर्रम का रोज़ा न छोड़ें, और अब तो मुसलमानों की दुश्मनी में यहूद न मुहर्रम जानें न मुहर्रम की 10 तारीख, इसलिए अब केवल 10 मुहर्रम का रोज़ा मकरूह भी न होना चाहिए। लेकिन हम को चाहिए कि 10 मुहर्रम के साथ एक दिन मिला कर रोज़ा रखें और दो दिनों का सवाब लें। निःसंदेह मुहर्रम

प्रतिष्ठित मास है और इस की दशम तिथि बड़ी सम्मानित तिथि है परन्तु बड़े खेद और दुख के साथ यह भी स्वीकार करना पड़ता है कि इसी मुबारक महीने और मुबारक तारीख आशूरा के दिन एक बड़ी दुखद घटना भी घटी है वह यह कि अल्लाह के प्रिय नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रिय नाती जो प्यारे नबी के सहाबी थे उनको उनके 72 साथियों के साथ जिनमें खानदान के 17 जवान भी थे। घर से बहुत दूर करबला के रेगिस्तान में औरतों और बच्चों के सामने शहीद कर दिया गया, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, जिस का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

हज़रत मुआविया रज़ि० की खिलाफत (शासन) का ज़माना था उन्होंने अपने अन्तिम काल में परिस्थिति को सामने रखते हुए अपने पश्चात के लिए अपने बेटे यज़ीद को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। उस समय लगभग साठ सहाबा मौजूद थे, उन को यह बात नई लगी, इसलिए कि अब तक जो

कुछ इस विषय में देखा था वह इस प्रकार था—

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पश्चात सहाबा ने एक मत हो कर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ि० को खलीफ़ा बनाया था। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने अपने अन्तिम समय में अपने बाद के लिए हज़रत उमर रज़ि० को नामित किया था, हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत अबू बक्र के घर खानदान के न थे। हज़रत उमर रज़ि० ने अपने पश्चात के लिए 6 सहाबा को नामित किया था कि सहाबा इन में से किसी एक को चुनें, इन में से कोई उमर रज़ि० के घर का न था। उन 6 में से हज़रत उस्मान रज़ि० का चयन हुआ था, उनका लम्बा काल बहुत अच्छा रहा परन्तु शैतान को यह न भाया उस ने हज़रत उस्मान रज़ि० के अन्तिम काल में सबाइयों द्वारा विद्रोह पैदा कर दिया यहां तक कि 18 ज़िलहिज्ज को सन् 35 हिजरी में विद्रोहियों ने हज़रत उस्मान को शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

अब मदीना वालों ने अलैहि व सल्लम ने अपने हज़रत अली रज़ि० को खलीफा चुना, उस समय हज़रत मुआविया, शाम के अमीर (गवर्नर) थे, वह हज़रत उस्मान के निकटी संबन्धी थे उन्होंने ने कहा कि हज़रत उस्मान के शहीद करने वालों को सजा दी जाय, परन्तु परिस्थिति कुछ ऐसी थी कि हज़रत अली के लिए हज़रत उस्मान रज़ि० के हत्यारों का पता लगाना और उन को दण्डित करना कठिन था, इस विवाद को लेकर दोनों में युद्ध छिड़ गया जो पाँच वर्षों तक चलता रहा, इस युद्ध में लगभग पचास हज़ार लोग हताहत हुए, 18 रमज़ान सन् 40 हिज़्री को एक खारिज़ी ने घोखे से हज़रत अली रज़ि० को शहीद कर दिया, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, वह खारिज़ी पकड़ा गया और उसे मौत के घाट उतार दिया गया, अब मुसलमानों ने हज़रत अली के बड़े बेटे हज़रत हसन रज़ि० को खलीफा चुना।

अलैहि व सल्लम ने दोनों नवासों के विषय में फरमाया कि वह दोनों जन्नत के जवानों के सरदार हैं और हज़रत हसन के विषय में फरमाया कि यह मेरा बेटा मुसलमानों के दो बड़े गुटों में संधि कराएगा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह सूचना भी दी थी कि मेरे पश्चात तीस वर्षों तक खिलाफत चलेगी फिर मुलूकियत अर्थात् बादशाहत आ जायेगी। जब हज़रत हसन (रज़ि०) खलीफा हुए तो खिलाफत के उन्तीस वर्ष छः महीने हो चुके थे अतः खिलाफत में केवल छः माह बाकी थे।

हज़रत हसन रज़ि० नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नवासे (नाती) हैं और सहाबी हैं नबी सल्लल्लाहु

हज़रत हसन खलीफा हुए तो उन का भी हज़रत मुआविया से युद्ध चलता रहा अब तक इस युद्ध में पचास हज़ार लोग हताहत हो चुके थे। अब हज़रत हसन ने युद्ध से हाथ रोका और हज़रत मुआविया से संधि कर ली इस प्रकार यह लम्बी लड़ाई समाप्त हो गई और हज़रत मुआविया बरहक (शुद्ध) खलीफा हो गये परन्तु अब वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन के अनुसार बादशाह थे।

अब तक मुसलमानों ने खलीफा बनने की उक्त विधियां देखीं थीं जब अमीर मुआविया रज़ि० ने अपने बेटे को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया तो मुसलमानों के सामने बिलकुल नई विधि आई जिसे लोगों ने पसन्द न किया और पाँच सहाबा, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र, हज़रत हुसैन बिन अली हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत हब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० ने विरोध प्रकट किया परन्तु हज़रत मुआविया अपने फैसले को सही समझते रहे यहां तक कि हज़रत मुआविया का 22 रजब सन् 60 हिज़्री को देहान्त हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हमारे ईमान की मांग यही है कि हम किसी सहाबी को बुरा न कहें, अपने मन में भी उनके विरोधी न बनें, सहाबी को सहाबी के मतभेद का अधिकार है परन्तु हम किसी सहाबी के विरोधी न बनें, मान लो हज़रत मुआविया से अपने बेटे को अपना उत्तराधिकारी बनाने में गलती हुई हो तो हम इस

गलती को इजतिहादी गलती समझते हुए उन का आदर करें और यह भी हो सकता है कि अल्लाह के निकट वह गलती पर न हों। जो भी हो हज़रत मुआविया रज़ि० के पश्चात उन का बेटा यज़ीद खलीफा हुआ, उसको मन से या बिना मन के, उस समय के सभी सहाबा ने स्वीकार कर लिया परन्तु अब्दुल्लाह बिन जुबैर और हुसैन बिन अली रज़ि० ने खलीफा मानने से इन्कार किया और जब उन से बैअत (खिलाफत की स्वीकृत) मांगी गई तो दोनो मदीना से मक्का चले गये, मक्के में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने अपनी खिलाफत के लिए प्रयास आरम्भ कर दिया और वह इस प्रयास में सफल भी हुए। दूसरी ओर हज़रत हुसैन रज़ि० को कूफियों ने कई सौ खुतूत (चिट्ठियां) भेजे और कहा आप कृपया कूफा आइये आप हमारे अमीर हैं, हम यज़ीद को अपना अमीर नहीं मानते, हज़रत हुसैन रज़ि० ने अपने चचा ज़ाद भाई मुस्लिम बिन अक़ील को हाल मालूम करने के लिए कूफा भेजा वहां से खत आ गया कि सब कुछ ठीक है,

आप आइये। यद्यपि कूफियों ने हज़रत अली रज़ि० को धोका दिया था, हज़रत हसन रज़ि० को भी धोका दिया था परन्तु उनके सैकड़ों खतों से हज़रत हुसैन रज़ि० प्रभावित हुए और धोका खा गये और अपने बाल बच्चों के साथ कूफे को चल पड़े, मक्के वालों ने आप को बहुत रोका विशेष कर अब्दुल्लाह बिन अब्बास जो उनके खान्दानी बुजुर्ग थे उन्होंने बहुत रोका परन्तु हज़रत हुसैन न माने और होनी हो के रही।

हज़रत हुसैन रज़ि० का यह काफ़िला कूफा के रास्ते पर था, इस काफ़िले में, हज़रत हुसैन के बेटे, हज़रत हसन के बेटे, हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील के बेटे, हज़रत ज़ैनब के बेटे अर्थात् घर के 18 जवान थे, औरतों में हज़रत हुसैन की पत्नी शहर बानों उनकी गोद में दूध पीता बच्चा अब्दुल्लाह था जिसे अली असगर भी कहा गया है, हज़रत हुसैन की बेटियां, बहन ज़ैनब, हज़रत ज़ैनुल आबिदीन की पत्नी उनके गोद में भी दूध पीता बच्चा मुहम्मद बाकिर था, कनीज़ें (सेविकाएं) थीं, और भी औरतें रही होंगी।

इन सब पर अल्लाह की रहमते हों। काफ़िला अभी बीच रास्ते में था कि ख़बर आई कि कूफा के हालात बदल गये हैं, वहां के गवर्नर इब्ने ज़ियाद ने कूफे पर यज़ीद की ओर से अधिकार जमा लिया है और हज़रत हुसैन के चचेरे भाई मुस्लिम बिन अक़ील को शहीद कर दिया है, इस ख़बर से हज़रत हुसैन को बड़ा दुख हुआ और लौटने का इरादा किया परन्तु मुस्लिम के घर वालों की बातों से प्रभावित हो कर हज़रत हुसैन ने लौटने का इरादा बदल दिया और दुख के साथ काफ़िला बढ़ता रहा, आगे चल कर एक पड़ाव पर इब्ने ज़ियाद की ओर से "हुर" एक हज़ार की सेना के साथ हज़रत हुसैन का रास्ता रोकने आ गये, जुह और अस की नमाज़ "हुर" ने अपनी सेना के साथ हज़रत हुसैन के पीछे पढ़ी, परन्तु उसने कहा कि आप कूफा नहीं जा सकते हैं, यह हाल देख कर हज़रत हुसैन ने काफ़िले को आदेश दिया कि अब सब लोग वापस चलें, सब तैयार भी हुए परन्तु "हुर" ने कहा मुझे आदेश है कि मैं आप को न

कूफ़ा जाने दूँ, और न मक्का वापस जाने दूँ, आप किसी और ओर चल सकते हैं, मजबूरन काफ़िला एक ओर चला यहां तक कि करबला के मैदान में पहुंचा तो अब आगे बढ़ने से रोक दिया गया, और काफ़िले ने वहीं पड़ाव किया यह 2 मुहर्रम की तारीख़ थी। इब्ने जि़याद ने चार हज़ार की सेना और भेज दी और हज़रत हुसैन से कहलाया कि या तो वह मेरे हाथ पर यज़ीद के लिए बैअत करें या लड़ने को तैयार हो जाएं, हज़रत हुसैन बैअत के लिए तैयार न हुए, परस्पर बात होती रही अन्ततः इतमामे हुज्जत के लिए हज़रत हुसैन ने तीन बातें रखीं:—

1. हम को हम जहां से आए हैं वहीं वापस जाने दिया जाए।
2. या हम को यज़ीद के पास जाने दिया जाए हम यज़ीद से मिल कर अपनी समस्या का समाधान कर लेंगे।
3. या फिर हम को किसी सरहद की ओर जाने दिया जाए।

परन्तु अपरिणाम दर्शी, क्रूर, अत्याचारी इब्ने जि़याद ने एक न मानी और आदेश

दिया कि सेना उन पर आक्रमण करे अतः 10 मुहर्रम 61 हिज़्री को सेना ने हज़रत हुसैन रज़ि० के काफ़िले पर हम्ला बोल दिया, हज़रत हुसैन के वीरों ने जम कर मुकाबला किया परन्तु कहां पाँच हज़ार कहां 72, सब शहीद हो गये किसी का तीर लगने से दूध पीते अली असगर भी शहीद हो गये, हज़रत ज़ैनुल आबिदीन बीमार थे वह युद्ध में शरीक नहीं हुए वह बच रहे, वह कैसा दुखद दृष्य था, जिसे आकाश ने देखा, इन्ना लिल्लहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

इसमें शक नहीं कि जिन जिन लोगों ने हज़रत हुसैन रज़ि० और उनके साथियों की शहादत में जिस प्रकार भी भाग लिया होगा वह अपनी अपनी क़बरों में उस का बदल पा रहे होंगे और कियामत के पश्चात जहन्नम की आग उन का स्वागत करेगी, बेशक शुहदा का बड़ा मर्तबा है, उनको अल्लाह की प्रसन्नता के साथ बड़े तथा बड़े पुरस्कारों के साथ स्थाई जीवन प्राप्त है, आदेश है कि उनको मुर्दा मत कहो वह एक विशेष

सुखद जीवन के साथ जीवित हैं, तुम उस जीवन के आनन्द को समझ नहीं सकते हो।

मुहर्रम के मुबारक महीने और आशूरा के मुबारक दिन में यह दुखद घटना उम्मत को दुखी कर गई। जो भुलाए नहीं भूलती, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

इस दुखद घटना ही के परिणाम स्वरूप मुहर्रम के महीने विशेष कर आशूरा की रात और दिन में जो ताज़िया दारी तथा नौहा व मातम और बाजों आदि की बिदअत तथा मकरूहात (बुराइयां) जारी हुईं वह भी उम्मत के लिए दुख की बातें हैं, जिस शरीअत की सुरक्षा के लिए हज़रत हुसैन रज़ि० ने अपनी जान कुर्बान की उस शरीअत का 10 मुहर्रम को मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है, हम प्रण करें कि हम हज़रत हुसैन रज़ि० और तमाज़ सहाबा रज़ि० से महबूबत रखेंगे और हज़रत हुसैन रज़ि० के नाना अलैहिस्सलातु अस्सलाम की शरीअत पर चलेंगे और उस की सुरक्षा में कोई कमी न करेंगे। अल्लाह हमारी मदद करे।

दीने इस्लाम का मिजाज और उसकी तुमायां खुशूसियत

—हज़रत मौ० सै० अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

—अनु० मु० हसन अंसारी

इस दीन की आठवीं खुसूसियत यह है कि अपनी असल हकीकत और ताजगी के साथ बाकी है। इसकी किताब महफूज़ और हर दौर में समझी जाने वाली है। यह जिस उम्मत के पास है वह गुमराही और किसी साज़िश का शिकार हो जाने से महफूज़ है। कुर्आन का यह एजाज़ और उसके मिनजानिब अल्लाह होने की दलील है कि उसने कुर्आन मजीद की सबसे ज़ियादा पढ़ी जाने वाली सूरः फातेहा में ईसाइयों के लिए "वलज्जालीन" का लक़ब इस्तेमाल किया। इस लफ़्ज़ का राज़ वही समझ सकता है जो ईसाइयत की तारीख़ से अच्छी तरह वाकिफ़ हो। मसीहीयत अपने शुरुआती दौर ही में उस सही रास्ते से हट गई जिस पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इस को छोड़ कर गये थे। एक ईसाई आलिम अपनी किताब में लिखता है:—

"जिस अकीदा और निज़ाम का जिक्र हमें इन्जील में मिलता है उसकी दावत हज़रत मसीह अलै० ने अपने कौल व अमल से कभी नहीं दी थी। इस वक़्त ईसाइयों और यहूदियों व मुसलमानों के बीच जो झगड़ा है उसकी ज़िम्मेदारी हज़रत मसीह अलै० के सर पर नहीं है बल्कि वह सब उस यहूदी व ईसाई बेदीन पॉल का करिश्मा है और मुकद्दस किताब की तफ़्सील के तरीक़े पर तशरीह और उसे मिसालों से भर देने का नतीजा है। पॉल ने स्टीफ़ेन के तकलीद में जो एसीनियों मज़हब का मानने वाला है, हज़रत मसीह अलै० के साथ बहुत सी बौद्ध रसूम को जोड़ दीं। आज इन्जील में जो मुतज़ाद कहानियां और वाक़ेयात मिलते हैं और जो हज़रत मसीह अलै० के बनाये हुए हैं। हज़रत मसीह अलै० ने नहीं बल्कि पॉल और उनके बाद आने वाले पादरियों और राहिबों ने इस सारे अकीदा और निज़ाम को तरतीब दिया जिसे आर्थोडाक्स मसीही दुन्या ने अद्वारह सदियों

से अपने अकीदा की बुन्याद करार दे रखा है।"

अल्लाह तआला का इरशाद है:—

तर्जुमा: "बेशक यह (किताब) नसीहत हम ही ने उतारी है, और हम ही इसके निगहबान हैं।" (सूरःहज़-9)

तर्जुमा: "इस (कुर्आन) का जमा करना और पढ़वाना हमारे ज़िम्मे है, बस हम "वही" पढ़ा करें तो तुम (इस को सुना करो) फिर इसी तरह पढ़ो फिर इस (के माअनी) का बयान भी हमारे ज़िम्मे है।"

(सूरः कयामत 17-19)

फिर उस दीन पर भरोसा नहीं किया जा सकता जिस पर कभी-कभी कुछ दिनों तक अमल किया गया वह पेड़ जो लम्बे समय तक बेहतर से बेहतर मौसम पाने के बावजूद फल न दे भरोसे के काबिल नहीं हो सकता। फिर यह उम्मत सिर्फ़ इस आसमानी किताब की मुख़ातब ही नहीं, वह इसके पैग़ाम को दुन्या में फैलाने में, उसे समझने, उस पर

अमल की दावत देने और खुद इसका नमूना बनने की भी जिम्मेदार है।

नवीं और आखरी बात यह है कि इस्लाम को एक साजगार फ़िज़ा, एक मुनासिब मौसम और माहौल की ज़रूरत है क्योंकि वह एक ज़िन्दा इन्सानी दीन है वह कोई अक़ली और नज़रियाती फ़लसफ़ा नहीं जो सिर्फ़ दिमाग़ के किसी खाने में या किसी कुतुबख़ाने के किसी कोने में महफूज़ हो। वह एक साथ अक़ीदा व अमल, सीरत व अख़लाक़ जज़बात व एहसासात के झुरमुट का नाम है। वह इन्सान को नये सांचे में ढालता और ज़िन्दगी को नये रंग में रंगता है। इसलिए अल्लाह तआला इस्लाम को "सिबग़तुल्लाह" के नाम से याद फ़रमाता है "सिबग़त" एक रंग और नुमाया छाप को कहते हैं। इस्लाम दूसरे मज़ाहिब के मुक़ाबले में ज़ियादा हस्सास (सूक्ष्मग्राही) है। इसके अपने ख़ास "हुदूद" हैं जिन से कोई मुसलमान हट नहीं सकता। किसी दूसरे मज़हब में "इरतेदाद" (दीन से फिर

जाना) का वह साफ़ मफ़हूम नहीं पाया जाता है जो इस्लामी शरीअत में है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयात तैय्यबा, इरशादात व हिदायात आप का उसवये मुबारक और आप की सुन्नत दीन के लिए वह फ़िज़ा और माहौल तैयार करते हैं जिसमें दीन का पौधा हरा भरा और फलता-फूलता है, क्योंकि दीन ज़िन्दगी के तमाम शरायत व सिफ़ात का मजमूआ है। इसलिए वह पैग़म्बर के जज़बात व एहसासात, उनकी ज़िन्दगी के वाक़िआत और अमली मिसालों के बिना ज़िन्दा नहीं रह सकता। दीन एक मिसाली और मेआरी माहौल की नज़ीर (उदाहरण) के बग़ैर ज़िन्दा व शादाब नहीं रह सकता, और यह माहौल हदीस नबवी के ज़रिए महफूज़ है। इसलिए अल्लाह ने कुर्आन की हिफ़ाज़त के साथ हदीस नबवी की भी हिफ़ाज़त फ़रमाई। इसी की बदौलत हयात तैय्यबा की फ़ैज़ रसानी अभी तक बाक़ी है। इसी की मदद से उलमाये उम्मत

"मारूफ़" व "मुन्कर" "सुन्नत" व "बिदअत" और "इस्लाम" व "जाहिलियत" के बीच हर ज़माने में फ़र्क़ करने के काबिल हुए। उन के लिए यह एक बैरोमीटर की तरह उनकी रहनुमाई करती रही। सुन्नत व हदीस के यह मजमूए हमेशा इस्लाह व तजदीद और सही इस्लामी फ़िक़्र का सरचश्मा रहे हैं। इन्हीं की मदद से इस्लाह का बीड़ा उठाने वालों ने हमेशा शिर्क व बिदअत और जाहिलियत के रसूम को मिटाया और उसको रद्द किया और तारीख़ शाहिद है कि जब भी हदीस व सुन्नत की किताबों से इल्मी हल्कों के तअल्लुक़ और वाक़फ़ियत में कमी आई और दूसरे उलूम में उनका इन्हिमाक (रूचि) बढ़ा, मुस्लिम सोसाईटी बासलाहियत लोगों की मौजूदगी में नई-नई बिदआत, जाहिली रस्में और ग़ैर मज़ाहिब के असरात का शिकार हो गई और कभी-कभी यह अन्देशा पैदा होने लगा कि वह असभ्य समाज का दूसरा एडीशन न बन जाये।

शेष पृष्ठ19...पर..

नई पीढ़ी के निर्माण में माँ का योगदान

—मौ0 डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी

इस्लाम आधुनिक दृष्टिकोणों, मिथ्या धर्मों के स्वयं रचित नियमों से उच्चतर तथा उत्तम आकाशिक धर्म तथा अनमोल जीवन प्रणाली है, वह अल्लाह के अधिकारों के साथ बन्दों के अधिकारों पर भी जोर देता है, बन्दों के अधिकारों में सब से अधिक माँ-बाप (माता-पिता) के अधिकारों पर जोर देता है, तथा उन के आदर सम्मान और उन के साथ सद्व्यवहार की शिक्षा देता है और मनुष्य के लिए अनिवार्य करता है कि वह माँ बाप की इस बड़ी नेअमत (देन) पर अल्लाह की कृतज्ञता प्रकट करता रहे, तथा कभी भी माता पिता से विमुखता न हो कि उन्हीं के द्वारा उस को जीवन मिला पवित्र कुआँन में जब अल्लाह की उपासना के आदेश का उल्लेख होता है तो साथ ही माँ-बाप के साथ सद्व्यवहार का आदेश भी मिलता है, पवित्र कुआँन में एक स्थान पर इस प्रकार आया है:—

अनुवाद:—“तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि उस के सिवा किसी की बन्दगी न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उन में से कोई एक या दोनों ही तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन्हें “उफ” तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उन से शिष्टतापूर्वक बात करो और उन के आगे दयालुता से नम्रता की भुजाएं बिछाए रखो और कहो “मेरे रब! जिस प्रकार उन्होंने बचपन में मुझे पाला है तू भी उन पर दया कर।”

(बनी इस्राईल: 23,24)

मुस्नद अहमद में आया है कि “हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० ने बयान किया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया उस व्यक्ति की नाक मिट्टी में रगड़ी जाये जिस के सामने मेरा जिक्र आये और वह मुझ पर दुरूद न पढ़े, और उस व्यक्ति की नाक मिट्टी में रगड़ी जाए जो रमजान का

—हिन्दी इम्ला: हुसैन अहमद

महीना पाए और उस की मगफिरत (क्षमादान) न हो और उस व्यक्ति की नाक मिट्टी में रगड़ी जाए जिस ने अपने माँ-बाप को बुढ़ापे में पाया और उन की सेवा कर के जन्नत का अधिकारी न बना।”

माँ नवजात को कई महीनों तक पेट में रखती है, उस के जन्म पर भारी कष्ट उठाती है, उस को अपना दूध पिलाती है उस का मल मूत्र धोती है उस की पूरी देख भाल रखती है, स्वयं कष्ट उठा कर उस को आराम पहुंचाती है, उस को चलना सिखाती है, उस को बोलना सिखाती है, उस को बड़ों का सम्मान करना सिखाती है उस को खाना पीना सिखाती है, उस को कपड़े पहनना सिखाती है उस को सम्य बनाती है, इस प्रकार माँ की गोद तथा माँ का संरक्षण नवजात के लिए वह पाठशाला है जिस की तुलना संसार के किसी पाठशाला से नहीं की जा सकती इसीलिए माँ का दर्जा बहुत ऊँचा है, सच्चा राही अक्टूबर 2016

माँ के जो हुकूक (अधिकार) हैं वह किसी और के नहीं, बाप के भी नहीं, पवित्र कुर्आन में अल्लाह तआला फरमाता है "अल्लाह ने तुम को तुम्हारी माओं के पेट से निकाला हालत यह थी कि तुम कुछ नहीं जानते थे" । (अन्नहल:78)

संसार के धर्मों में एक वृत्तांत ऐसा भी मिलता है कि केवल माँ ने, पति के बिना अपने बेटे को जन्म दिया और यह वृत्तांत हज़रत ईसा अलै० के जन्म का है, इसी लिए उन को माँ से संबंध जोड़ते हुए ईसा इब्ने मरयम कहा जाता है, हज़रत ईसा अलै० का अस्वभाविक जन्म अल्लाह के आदेश से हुआ वह अल्लाह के बन्दे हैं, न अल्लाह हैं न अल्लाह के बेटे। अल्लाह तआला पवित्र कुर्आन में उन के विषय में फरमाता है:—

अनुवाद: "जो लोग यह बात मानते हैं कि ईसा बिन मरयम, अल्लाह हैं, वह बेशक काफिर हैं (उन से) कह दो कि अगर अल्लाह तआला ईसा इब्ने मरयम और उनकी माँ को और जितने लोग इस धरती पर हैं उन सब का

विनाश करना चाहे तो उस के आगे किस की (रोक) चल सकती है तथा आकाश और धरती और उन दोनों के बीच में जो कुछ है उस सब पर अल्लाह ही की बादशाही है वह जो चाहता है पैदा करता है और अल्लाह तआला हर चीज पर कादिर (शक्तिमान) है। (अलमाइदा:17)

अल्लाह तआला पवित्र कुर्आन में एक दूसरी जगह फरमाता है।

अनुवाद: "मसीह इब्ने मरयम तो केवल अल्लाह के पैग़म्बर थे उन से पहले भी बहुत से रसूल (संदेष्टा) गुजर चुके थे और उन की माँ मरयम अल्लाह की वली (भक्तिनी) और सच्ची आज्ञाकारी थीं दोनों मानव थे और खाना खाते थे, हम उन लोगों के लिए अपनी आयतें किस तरह खोल-खोल कर बयान करते हैं, फिर यह देखो कि यह किधर उल्टे जा रहे हैं" ।

(अलमाइदा: 75)

कुर्आन में नबी की अजवाज को मुसलमानों की माँ कहा गया है।

अनुवाद: पैग़म्बर ईमान वालों पर उन की जानों से

अधिक अधिकार रखते हैं और पैग़म्बर की पत्नियां उन की माएं हैं" ।

(अल अहजाब:6)

अल्लाह के रसूल ने माँ के स्थान को जिहाद से बढ़ कर बताया है, आपने सहाबा को बाप से तीन गुना अधिक माँ की सेवा का आदेश दिया है, पवित्र हदीस में है।

अनुवाद: मुआविया बिन जाहिमा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और कहा ऐ अल्लाह के रसूल मैं खुदा की राह में जिहाद करना चाहता हूँ और आप से पूछने आया हूँ, आप ने उन से पूछा कि क्या तुम्हारी माँ हैं? जवाब दिया हाँ, फरमाया उनकी खिदमत में लग जाओ, जन्नत उन के कदमों (पगों) के तले है। मुस्नद अहमद की एक दूसरी रिवायत में है।

अनुवाद: "अल्लाह तुम्हें अपने वालिद के साथ अच्छे व्यवहार का आदेश देता है, अल्लाह तुम्हें अपनी वालिदा (माँ) से अच्छे व्यवहार का आदेश देता है, अल्लाह तुम्हें क्रमशः निकट सम्बंधियों से अच्छे व्यवहार का आदेश देता है।"

इस्लामिक इतिहास में ऐसी माताओं के अनगिनत वर्णन हैं, जो संयम तथा निष्ठा के उच्चतर स्थान पर थीं, जैसे हज़रत मूसा अलै० की माँ, हज़रत इस्माईल अलै० की माँ, हज़रत इस्हाक अलै० की माँ, सहा-बए-किराम और औलिया उल्लाह और उलमा की माएं, जिन के पालन पोषण, संगत तथा शिक्षण से यह सभी सज्जन ज्ञान विज्ञान और उच्च कर्मों से सुसज्जित हुए और उच्च स्थान प्राप्त किया, अल्लाह की निकटता प्राप्त की और पूरे संसार में अल्लाह का संदेश पहुंचाने का सौभाग्य प्राप्त किया, यद्यपि पैगम्बरों की तरबीयत अल्लाह की तरफ से होती है लेकिन उन की माएं बड़ी भाग्यवान हैं कि उन को पैगम्बरों को दूध पिलाने और सेवा करने का अवसर मिला। भली माओं ने उलमा तथा धर्म प्रकाशक उम्मत को दिये और स्वयं गुप्त रूप से दीन की तबलीग व इशाअत (प्रचार तथा प्रसार) में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

बच्चों के आचरण बनाने

तथा संवारने में माँ का बड़ा महत्व है, बच्चों के लिए माँ की दुआएं स्वीकृत होती हैं, हज़रत इमाम बुखारी को कौन नहीं जानता, बचपन में नाबीना (नेत्रहीन) हो गये थे, उन की माँ बहुत नेक और अल्लाह वाली थीं उन्होंने अपने बेटे के लिए खूब लग कर दुआएं कीं यहां तक कि उनकी आँखों में रोशनी (ज्योति) आ गई।

समाज के बनाव और बिगाड़ में माँ का बहुत महत्व है, वह बच्चों की सब से अच्छी अध्यापिका है, फूलों के बिना जिस प्रकार वाटिका सुन्दरता रहित रहती है उसी प्रकार समाज को असम्य बच्चा सुन्दरता रहित बनाता है, और बच्चे की सम्यता निर्भर है माँ के अच्छे पालन-पोषण पर, बच्चे समाज के फूल हैं माँ उन की देख भाल कर के समाज को उन के द्वारा सुसज्जित बनाती है, निपोलियन ने कहा था तुम मुझे अच्छी माएं दो मैं तुम्हें अच्छी कौम दूंगा, इकबाल का कौल है "अच्छे मनुष्यों का इतिहास तथा उनके विगत जीवन और कृतियों में माँ का योगदान है।

इस्लाम ने आरम्भ ही से मर्दों और औरतों में समस्त कर्मों तथा उपासनाओं में बराबरी की शिक्षा दी। एक बार उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि क्या कारण है कि मर्दों की भांति हम औरतों का वर्णन कुर्आन नहीं करता? इस का उल्लेख मुसनद अहमद में इस प्रकार है "इमाम अहमद, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन शैबा से नक्ल करते हैं कि मैंने उम्मुल मोमिनीन, उम्मे सलमा से सुना, वह कहती हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि क्या वजह है कि कुर्आन मर्दों की तरह हम औरतों का जिक्र नहीं करता? उस दिन रसूल के भिंबर पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आवाज ने मुझे आकर्षित किया, मैं बालों में कंघी कर रही थी, मैंने बाल समेटे और हुजरे की ओर निकल आई और दीवार से कान लगा दिये, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमा रहे थे ऐ लोगो अल्लाह फरमाता है।

सच्चा राही अक्टूबर 2016

अनुवाद: "निःसन्देह मुस्लिम पुरुष और ईमान वाली औरतें, निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करने वाले पुरुष और निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करने वाली औरतें, सत्यवादी पुरुष और सत्यवादी औरतें, धैर्यवान पुरुष और धैर्यवान स्त्रियां, विनम्रता दिखाने वाले पुरुष और विनम्रता दिखाने वाली स्त्रियाँ, सद्का (दान) देने वाले पुरुष और सद्का देने वाली स्त्रियां, रोज़ा रखने वाले पुरुष और रोज़ा रखने वाली स्त्रियां अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले पुरुष और रक्षा करने वाली स्त्रियां और अल्लाह को अधिक याद करने वाले पुरुष और अधिक याद करने वाली स्त्रियां, इन सब के लिए अल्लाह ने क्षमा और बड़ा प्रतिदान तैयार कर रखा है" । (अल अहज़ाब: 35)

स्पष्ट है कि यह आयत हज़रत उम्मे सलमा के प्रश्न पर उतरी, इस आयत में हज़रत उम्मे सलमा के प्रश्न का संतोष जनक उत्तर है।

यह आयत मुस्लिम समाज के निर्माण और उसको संवारने में बड़ी महत्व रखती

है, इसमें मर्द और औरत को अपने निजी जीवन में समान अधिकार प्राप्त है, निःसंदेह इस मानवीय समानता तथा आदर्श जीवनी तथा सदाचरण के निर्माण में माँ का बड़ा महत्व है, यही कारण है कि इस्लामिक शिक्षाएं माँ को उच्चतर स्थान देती हैं, माँ की जिम्मेदारी है कि वह अपनी सन्तान को दीन, अख़्लाक और उच्च आचरण से सुसज्जित करे, यदि हम ध्यान दें तो इतिहास के प्रसिद्ध लोगों, विद्वानों विचारकों समाज सुधारकों की एक सूची तैयार कर सकते हैं जिन की जीवनी तथा आचरण के निर्माण में उन की माओं का आधारभूत योगदान रहा है, आप बड़े बड़े मुफ़स्सिरीन, मुहद्दिसीन, इस्लामिक ज्ञान के विशेषज्ञ, इस्लाम धर्म के प्रचारकों, मुस्लिम शासकों, मुस्लिम नेताओं, इतिहास रचने वालों, इस्लामिक सभ्यता के शिक्षकों, अल्लाह के मार्ग में सर कटाने वालों, अल्लाह के मार्ग में प्राण निछावर करने वालों सदाचारों तथा उन जैसे तमाम बड़ों की जीवनी का अवलोकन करें तो

आप पाएंगे कि उन की जीवनी के पीछे उन की भली माओं का योगदान रहा है, उन सब के जीवन की शुद्ध आधारशिला माँ ही ने रखी थी, माँ ही ने उन को प्रवान चढ़ाया था। और माँ ही ने उनको सत्य मार्ग पर चलने वाला बनाया था।

इस्लामिक इतिहासकारों ने ऐसी माओं का इतिहास लिखा है जो किताबुल्लाह, सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इस्लामिक शास्त्र की विशेषज्ञ थीं, उन की गिन्ती एक दो नहीं सैकड़ों, हजारों तक पहुंचती है, जिन की कीर्तियों और श्रेष्ठता को देख कर कितने प्रसिद्ध मर्दों की निगाहें झुक गई और उन्होंने मर्द होते हुए उन औरतों से अपने को कम दर्जे का पाया।

फिर मोमिनों को माओं (नबी की पत्नियों) ने दीन को जो शक्ति दी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निजी जीवन की मालूमात जिस प्रकार उम्मत को पहुंचाई, इस्लाम के सन्देश को पहुंचाने, दीन की ओर

बुलाने, और हर समय हुजूर के साथ रहने, तथा बराबर साथ देने, अपनी शक्ति के अनुसार अवसर पड़ने पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बचाव करने जैसे कारनामों को कौन भुला सकता है?

उदाहरणार्थ हज़रत खदीजा रज़ि० ही को ले लीजिए कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए किस प्रकार ढाल बन गई और दुर्ग का काम किया, नुबूवत की आरम्भिक घड़ियों में किस प्रकार आप को साहस दिलाया, पहली "वही" के उतरने के पश्चात आपको जब घबराहट हुई तो हज़रत खदीजा ने आप को सांत्वना दी और संतोष दिलाया, उस समय की घटना को अपने सामने लाइये नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिरा की गुफा में अकेले अल्लाह के ध्यान में हैं, कि जिब्रील अलै० उतरते हैं और कहते हैं।

अनुवाद: पढ़िये, नबी उत्तर देते हैं मैं पढ़ना नहीं जानता, जिब्रील आप को सीने से लगा कर भेंचते हैं और फिर कहते हैं पढ़िये,

फिर आप उत्तर देते हैं, मैं पढ़ना नहीं जानता, फिर जिब्रील आप को सीने से भेंचते हैं और कहते हैं पढ़िये, ऐसा तीन बार करते हैं, यहां तक की नबी को इस से कष्ट होता है, फिर जिब्रील अलै० ने आप को सूरतुल अलक की आरम्भ की पाँच आयतें पढ़ाई और आप ने पढ़ी। फिर आप घर लौटते हैं, भय से आप कांप रहे हैं, हज़रत खदीजा से कहते हैं मुझे चादर ओढ़ाओ मुझे चादर ओढ़ाओ, जब कुछ शान्ति हुई तो हज़रत खदीजा से कहते हैं मुझे अपने प्राण का भय है और "हिरा" में जो कुछ हुआ उस को सुनाते हैं, उस समय हज़रत खदीजा रज़ि० कहती हैं अल्लाह आप को कैसे रुस्वा (अपमानित) कर सकता है, आप संबन्धियों के साथ सद्व्यवहार करते हैं, दूसरों का बोझ उठाते हैं, निर्धनों की मदद करते हैं, यतीमों की सेवा और उन का आदर करते हैं, अल्लाह के मार्ग पर चलने वालों की कठिनाईयों पर मदद करते हैं, इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को संतोष दिलाती

हैं और हर अवसर पर आप का साथ देती हैं, हज़रत खदीजा रज़ि० का यह बड़ा कारनामा है, यह केवल एक उम्मुल मोमिनीन की कीर्तियां हैं, अन्यथा हर उम्मुल मोमिनीन ने अलग अलग शरीअत के प्रसारण में जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सहयोग दिया वह किसी से छुपा नहीं है।

आधुनिक पाश्चात भौतिकवादियों ने माँ का स्थान लुप्त कर दिया है, जिस का परिणाम यह है कि वह अपनी संतान के पालन पोषण तथा शिक्षण की सेवा से वंचित हैं, बच्चे माँ की ममता से वंचित हैं, और माएं उन के पालन पोषण से, जो माएं मर्दों की भीड़ में चलें, बे पर्दा हो जायें, तथा मर्दों की सभा की शोभा बनें वह भला बच्चों की शिक्षा दीक्षा का पवित्र काम कैसे कर सकती हैं, यह भौतिकवादी शक्तियां मन की शान्ति खो चुकी हैं, प्रेम के शब्द से भी अपरिचित हैं, पवित्र घरेलू जीवन से वंचित कर के उसे जहन्नम बना दिया है, फिर भी यह भौतिकवादी स्त्रियों को उन

शेष पृष्ठ37...पर...

सच्चा राही अक्तूबर 2016

जनता की चिन्ता

—मौलाना नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

इस्लामी साम्राज्य के सम्राट से मिलने कुछ लोग मदीने से दमिश्क पहुंचे। भेंट हुई तो सम्राट हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज रह0 ने उनका हाल-चाल पूछने के बाद विशेष रूप से पूछा कि मदीने के अमुक स्थान पर कुछ फकीर बैठा करते थे, उनका क्या हाल है?

हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज रह0 खलीफा बनने के पूर्व मदीने के गवर्नर रह चुके थे। गवर्नरी के दौर में उन्होंने अरब शासक वलीद बिन अब्दुल मलिक के निर्देश पर मस्जिदे नबवी को बहुत ही शानदार और खूबसूरत बनवाया था। ये वही वलीद बिन अब्दुल मलिक हैं जिनके शासन काल में मुसलमानों ने इस्लाम का विस्तार एक ओर स्पेन तो दूसरी ओर चीन तक तथा तीसरी तरफ सिन्ध तक कर दिया था।

ख़ैर! फकीरों की बात पूछने पर उन लोगों ने कहा, अब वह फकीर उस स्थान

पर नहीं बैठते, अल्लाह ने उनके हालात बदल दिये हैं।

याद रखने योग्य बात है कि अल्लाह बन्दों के ही द्वारा बन्दों के हालात बदलता है। हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज रह0 ने अपने शासन काल में आर्थिक पॉलिसी ऐसी बनाई थी कि इस्लामी साम्राज्य में आम आदमी के हालात सुधर जाएं। ये जो आमतौर पर समझा जाता है कि रोटी, कपड़ा और मकान अथवा रोजगार की समस्या का निदान कम्युनिस्ट क्रान्ति के पश्चात चीन अथवा रूस ने किया, गलत है। बल्कि वास्तविकता यही है कि लगभग सवा चौदह सौ वर्ष पूर्व इस्लाम ने ही उपर्युक्त समस्याओं के निदान हेतु राह सुझाई। अब ये और बात है कि हम मुसलमान ही अपना इतिहास मुला बैठे हैं।

इस्लाम कहता है कि हुकूमत अल्लाह की अमानत है चाहे दस आदमियों की हो

चाहे दस करोड़ की। मुस्नद अहमद नामक ग्रन्थ में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि कोई व्यक्ति यदि दस आदमियों पर शासक नियुक्त हो तो कयामत के दिन खुदा के सामने इस प्रकार आएगा की उसका हाथ गर्दन से बंधा हुआ होगा। उसकी नेकियां या तो उसे छुटकारा दिला देंगी अथवा उसके पाप उसको हलाक कर देंगे।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज रह0 की पत्नी हज़रत फातिमा एक बार घर के काम-काज से छुट्टी पा कर आप की सेवा में आई तो देखा की वह जानमाज़ पर बैठे हैं और आंखें आंसुओं से तर हैं। वह तुरन्त निकट गई और पूछा, कोई विशेष बात? कहा, दरअसल मैंने मुसलमानों का शासक बन कर पूरे मुसलमानों की जिम्मेदारी अपने सर धर ली। देश में जितने भी छोटे-बड़े

शेष पृष्ठ27...पर...

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफती ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: फर्ज नमाज़ की जमाअत हो रही है अगली सफ में कई नमाज़ियों की जगह खाली है, पीछे की दो तीन सफें भरी हैं, अगर पिछली सफ से अगली सफ भरने के लिए कोई जाता है तो नमाज़ियों के सामने से गुज़रना पड़ता है, ऐसे में क्या करना चाहिए?

उत्तर: अगर अगली सफ में जगह खाली है तो पीछे के लोगों को चाहिए कि सफ के बीच से निकल कर अगली सफ भर लें, सफ पूरी करने के लिए नमाज़ी के सामने से गुज़रने में भी कोई गुनाह नहीं होता।

(मनीयतुल मुसल्ला: 244)

प्रश्न: फर्ज नमाज़ों की सफ बनाने में क्या कन्धे से कन्धा और कदम से कदम मिला कर खड़े होना जरूरी है या कुछ फासले की भी गुंजाइश है?

उत्तर: फर्ज नमाज़ में सफ की बड़ी अहमीयत और ताकीद है नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सफ सीधी रखने का हुक्म दिया

है और यह भी फरमाया है कि लोग आगे पीछे न हों, हज़रत अनस रज़ि० बयान करते हैं कि हम लोग फर्ज नमाज़ की सफों में मोंढ़े से मोंढ़ा और कदम से कदम मिला कर खड़े हुआ करते थे लेकिन जिस्मों के फर्क से मुम्किन नहीं कि सफ में सब के मोंढ़े से मोंढ़े मिले रहें।

हदीस का मतलब यह है कि हम लोग सफों में मिल कर खड़े होते थे बीच में जगह नहीं छोड़ते थे।

(सही बुखारी: 692)

इस रिवायत से मालूम हुआ कि सफों में नमाज़ियों के बीच फासिले की गुंजाइश नहीं है।

प्रश्न: फर्ज नमाज़ की सफों में पाँव से पाँव मिला कर खड़े होने का क्या हुक्म है? इस सिलसिले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क्या अमल था?

उत्तर: इस सिलसिले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमल मिलना दुशवार है इस लिए कि आप

हमेशा इमाम रहते थे, अलबत्ता आप ने एक बार हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ के पीछे नमाज़ पढ़ी क्योंकि आप नमाज़ शुरु होने के बाद तशरीफ लाये थे, आखरी वक़्त में मर्ज के सबब हज़रत अबू बक्र रज़ि० के बगल बैठ कर नमाज़ अदा की इन नमाज़ों की रिवायतों में जिक्र नहीं है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बगल खड़े सहाबी के कदम से कदम मिलाया था या नहीं मिलाया था, इसलिए यह कहना मुश्किल है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सफों में कदम से कदम मिलाने का हुक्म दिया। अलबत्ता आप ने मोंढ़े से मोंढ़ा मिलाने और गर्दनों को एक सीध में रखने का हुक्म दिया है, हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० की रिवायत में गर्दनों को एक सीध में रखने का हुक्म है और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की रिवायत में मोढ़ों को एक सीध में रखने का हुक्म है।

(अबू दाऊद: 666, 667)

हाँ बाज सहाबा से नक़ल किया गया है कि वह सफ़ में कदम से कदम मिला कर खड़े हुआ करते थे।

(सहीह बुखारी फ़ह्लुलबारी में: 2/211)

मालूम हुआ कि फ़र्ज नमाज़ की सफ़ों में नमाज़ियों को एक दूसरे से मिल कर खड़े होना चाहिए, नमाज़ियों के बीच में जगह न हो, क़दम से क़दम मिलाना मक़सूद नहीं।

प्रश्न: फ़र्ज नमाज़ की सफ़ों में बच्चे अगली सफ़ों में खड़े हो सकते हैं या नहीं वह पिछली सफ़ में खड़े होते हैं तो शोर व गुल मचाते हैं ऐसे में क्या करना चाहिए?

उत्तर: असल में बच्चों की सफ़ बड़ों से पीछे होना चाहिए, हज़रत अबू मालिक अशअरी के बारे में मरवी है कि उन्होंने ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीके पर नमाज़ पढ़ा कर दिखाया उन्होंने पहले मर्दों की सफ़ें बनाई फिर उन के पीछे बच्चों की उस के बाद नमाज़ पढ़ाई।

(अबू दाऊद: 677)

लेकिन यह हुक्म उस वक़्त है जब बच्चे शोर व गुल न करते हों अगर छोटे बच्चे शोर व गुल करते हों तो उनको बड़ों की सफ़ में खड़ा करना चाहिए, अल्लामा राफ़ई ने अल्लामा रहमती की तरफ से नक़ल किया है कि बच्चे अगर शोर करते हों तो उनको बड़ों की सफ़ में ले लें ताकि उनके शोर व गुल से नमाज़ में खलल न हो।

(तक़रीरत अलशशामी जिल्द 2/73)

बच्चों को बड़ों की सफ़ों से डाँट कर भगाना उन की तरबीयत के खिलाफ़ है, अलबत्ता बिल्कुल नादान बच्चों को मस्जिद में न लाना चाहिए कि कहीं पेशाब वगैरा न कर दें ऐसे ही बच्चों के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उन से मस्जिद को बचाया जाये।

(मुसन्नफ़ अब्दुर्रज्जाक हदीस: 1728)

प्रश्न: हमारे इलाके में कुछ सुन्नी मुसलमान हज़रत हुसैन रज़ि० की शहादत की याद और उन की महब्बत में आशूरा की रात में चबूतरे पर या तख़्त पर ताजिया (ज़रीह) रखते हैं, उसके गिर्द चरागां करते हैं, उस पर चढ़ावा

चढ़ाते हैं, उस की जियारत करते हैं, उस के गिर्द रात जागते हैं और आशूरा के रोज़ उसे बाजे, गाजे के साथ मरसिया पढ़ते हुए ले जा कर दफ़न करते हैं, शरीअत में इन बातों का क्या हुक्म है?

उत्तर: सवाल में पूछी गई सारी बातें ना जाइज़ हैं, जो सुन्नी मुसलमान यह काम करते हैं वह गुनाह करते हैं वह इन कामों को छोड़ें और तौबा करें, यह सारे काम हज़रत हुसैन रज़ि० की महब्बत के नहीं बल्कि उन के नाना की शरीअत की मुख़ालफ़त के हैं।

प्रश्न: ईसाले सवाब के लिए सू-रए-फ़ातिहा पढ़ना, फिर कुछ कुर्आन पढ़ना फिर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दुआ करना कि ऐ अल्लाह मेरे इस पढ़ने को क़बूल फ़रमा और इस का सवाब फुलां फुलां की अरवाह को बख़्श दे और उनकी मग़फ़िरत फ़रमा। ईसाले सवाब के इस अमल में कोई ख़राबी तो नहीं है?

उत्तर: ईसाले सवाब का यह तरीका दुरूस्त है, ईसाले सवाब के इस तरीके में कोई क़बाहत (ख़राबी) नहीं है।



पर्यावरण की सुरक्षा

—प्रस्तुति द्वारा: एक छात्रा

हमारी धरती के चारों ओर वायु की एक मोटी परत है। उसे वायुमंडल या वातावरण कहते हैं। सारे जीव-जन्तु और पेड़-पौधे इसी वायुमंडल में जीवित रहते हैं। अल्लाह ने जीवन के सभी साधन वातावरण से जोड़ दिए हैं। हवा, पानी, धरती, जीवन-जन्तु, पेड़-पौधे इत्यादि हमारे जीवन के साधन हैं। इन साधनों में परस्पर गहरा सम्बन्ध है। इन से वातावरण में संतुलन बना हुआ है। यह संतुलन हमारे जीवन के लिए उपयोगी है।

इनमें से कोई चीज़ हमारे लिए बेकार नहीं है। इनमें प्रत्येक चीज़ के बीच परस्पर अन्योन्याश्रित संबंध है। इनके इस संबंध को अगर क्षति पहुंचाई जाती है या इनमें से किसी को नष्ट कर दिया जाता है तो सारा संतुलन बिगड़ जाता है। केवल मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े तथा वनस्पति के जीवन के लिए भी संकट उत्पन्न हो जाता है। धरती के आस-पास उपस्थित सारे प्राकृतिक

साधनों को वातावरण कहा जाता है। उसकी सुरक्षा करना जीव-जन्तुओं की अस्तित्व-रक्षा के लिए अनिवार्य है।

मानव अपना स्वार्थ साधने के लिए विभिन्न प्रकार के पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ता है और पर्यावरण को प्रदूषित या क्षतिग्रस्त करके अपने जीवन के लिए संकट उत्पन्न कर लेता है। यह उसके अपने हाथों की कमाई है, जिस से जल और थल में बिगाड़ और फ़साद फैल गया है।

पर्यावरण के प्रदूषित होने के अनेक कारण हैं। एक ओर घरेलू सतह पर अशिक्षा और अज्ञानता की प्रमुख भूमिका है तो दूसरी ओर शिक्षित लोगों की स्वार्थपरता और उत्तरदायित्व हीनता भी इसका कारण है। हम सावधानी बरत कर पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचा सकते हैं। प्रायः हम देखते हैं कि लोग अपने घरों के आस पास कूड़ा-कचरा डाल देते हैं। फलों के छिलके, सब्जी के डंठल और उपयोग में न

आने वाले अन्य पदार्थों के सड़ जाने के कारण उनमें दुर्गंध पैदा होती है और कीड़े पड़ जाते हैं। उन पर मक्खियां बैठती हैं। वही मक्खियां हमारे घरों में आती हैं। उनके रोगाणु हमारे घरों और भोजन की वस्तुओं तक पहुंच जाते हैं। इस से तरह तरह के रोग फैलते हैं। दुर्गन्ध से हवा प्रदूषित होती है। उसी प्रदूषित हवा को हम सांस के द्वारा अपने शरीर के अन्दर ले जाते हैं। इससे हमारा स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। हम नालियां में गन्दगी बहा देते हैं जो प्रायः खुले होते हैं। कुछ लोग उसी में मल-मूत्र भी डाल देते हैं। इस से भी हमारे पास-पड़ोस में गन्दगी फैलती है।

कूड़ा कचरा फेंकन और नालियों की सफ़ाई की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए। जहां सरकार की ओर से कूड़ेदान, पक्की नालियां और सफ़ाई की व्यवस्था नहीं है, वहां स्थानीय निवासियों को पारस्परिक सहयोग से इन चीज़ों की व्यवस्था करनी चाहिए

जनसाधारण को भी सफ़ाई का प्रशिक्षण दे कर उन को जागरूक बनाना चाहिए, ताकि वे अपनी असावधानी से गन्दगी न फैलाएं।

कल-कारखाने, मोटर गाड़ियां, रेल गाड़ियां, हवाई जहाज इत्यादि के धुएं और उनकी आवाजों से भी प्रदूषण फैलता है। उनसे निकलने वाली आवाजों से वायु में तीव्र कम्पन्न उत्पन्न होता है इसी प्रकार लाउड स्पीकर और तरह तरह के बाजे, ढोल, पटाखों इत्यादि से भी वातावरण में ध्वनि प्रदूषण फैलता है। धुएं और रासायनिक ईंधनों से उत्पन्न विषैली गैसों हवा को दूषित करती हैं। ये सारी चीजें मनुष्यों, अन्य जीव-जन्तुओं तथा वनस्पतियों के लिए भी हानिकारक होती हैं। इसके कारण अनेक प्रकार के जीव जन्तुओं की नस्लें समाप्त होने के कगार पर हैं और कोमल पेड़ पौधे कुम्हला रहे हैं। वायु-प्रदूषण के कारण श्वास-रोग, हृदय रोग, दृष्टिहीनता इत्यादि होते हैं।

कल-कारखानों के रासायनिक कचरों को नालियों द्वारा नदियों में बहा दिया जाता है। इस से नदियों का

जल विषाक्त हो जाता है। वह मनुष्य के उपयोग के लायक नहीं रहता। मछलियां और अन्य जलीय जीव मर जाते हैं। विषाक्त जल पेड़-पौधों के लिए भी हानिकारक होता है। अतः कल-कारखानों को आबादी से दूर स्थापित करने और उनसे उत्पन्न कचरों को नदियों के बजाय दूसरी जगह डालने का उपाय किया जाना चाहिए। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार, मनुष्य में फैलने वाले 90 प्रतिशत रोगों का कारण जल प्रदूषण ही होता है। पेट की बीमारियां, रक्त चाप, चर्म रोग, आंख, गले और छाती के अधिकतर रोग प्रदूषित जल के कारण ही होते हैं।

जंगलों का क्षेत्रफल दिन-प्रतिदिन कम होता जा रहा है, क्योंकि कृषि-भूमि, गृह-निर्माण और ईंधन के लिए पेड़ पौधे काटे जा रहे हैं। इस कारण वायु में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य हानिकारक गैसों का अनुपात बढ़ रहा है। धूप और गरमी में वृद्धि तथा वर्षा में कमी हो रही है। जंगली जानवरों की अनेक प्रजातियों का विनाश हो रहा है। इससे धरती के सारे जीव-जन्तुओं

पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। धरती की उर्वरा शक्ति क्षीण हो रही है। उपजाऊ भूमि के बंजर और रेगिस्तान बन जाने का खतरा बढ़ गया है। फलतः वातावरण में असंतुलन उत्पन्न हो गया है।

अतः नये जंगल आबाद करने तथा ज़ियादा से ज़ियादा पेड़-पौधे लगाए जाने चाहिए। वृक्षारोपण अभियान में हम सबको शामिल होना चाहिए। यह हर्ष का विषय है कि वृक्षारोपण के प्रति हम जागरूक हो गए हैं। हर वर्ष सामाजिक संस्थाओं और सरकारी योजनाओं के अन्तर्गत बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान चलाया जाता है। हमें भी आगे बढ़ कर उस में भाग लेना चाहिए। जीव जन्तुओं की नस्लों की सुरक्षा के भी उपाय किए जा रहे हैं धनवानों की विलासितापूर्ण जिन्दगी भी पर्यावरण को क्षति पहुंचाती है। वातानुकूलित कमरों और होटलों की अनावश्यक वृद्धि से जल-संपदा में कमी होती है। एक कमरे को ठण्डा करने के लिए जितने पानी का उपयोग होता है उतने पानी से सैकड़ों लोगों की प्यास बुझ सकती है। सारा सच्चा राही अक्टूबर 2016

पानी धरती के अन्दर से निकाला जाता है। इसलिए धरती के अन्दर पानी की सतह नीची हो रही है। कुएं सूख रहे हैं। मनुष्य और पशुओं के लिए जलापूर्ति की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है।

विकसित देशों ने अपने आणविक परीक्षणों और आयुधों की तैयारी के कार्यक्रम से महासागरों और वायुमण्डलीय ओजोन परतों को भारी क्षति पहुंचाई है। सूर्य की विषैली किरणों के रिसाव के कारण वर्षा का जल दूषित हो रहा है और धरती के जीव-जन्तु और मिट्टी तथा वनस्पतियां रूग्ण और मृतप्राय हो रही हैं। विश्व के वैज्ञानिकों की चीख-पुकार के बावजूद इस प्राणघाती आपदा को टालने की कोई कारगर व्यवस्था नहीं हो पा रही है। महाशक्तियां अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए लगातार अपनी परमाणु शक्तियों में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि कर रही हैं। इस से आणविक ताप के विकिरण में वृद्धि हो रही है। स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। अपंग शिशुओं के जन्म में वृद्धि आदि इसी के दुष्परिणाम हैं।

जब तक मानव के अन्दर अपने रब के प्रति उत्तर दायित्व की भावना उत्पन्न नहीं होगी, तब तक मनुष्य अपने स्वार्थ और हानिकारक क्रिया-कलापों का त्याग नहीं कर सकता। बाहरी उपायों के साथ-साथ मानव के मन की भावना को बदलने की भी आवश्यकता है।

विश्व के साधनों का मालिक मनुष्य नहीं बल्कि अल्लाह है। लेकिन अज्ञानतावश मनुष्य स्वयं को मालिक समझ कर अपनी इच्छा से बिना रोक-टोक दुरुपयोग करता है। इस से प्रकृति में असंतुलन उत्पन्न होता है और विभिन्न प्रकार की विकृतियां फैलती हैं। अल्लाह की बनाई-संवारी हुई इस दुनिया को इन्सान अपने हाथों से बिगाड़ रहा है। दुनिया का मालिक इसे पसन्द नहीं करता है कि उसकी दुनिया में फ़साद और बिगाड़ फैले।

अतः प्रकृति में गड़बड़ी पैदा करने और प्राकृतिक साधनों का अनुचित उपयोग करने से आखिरी पैगम्बर और मानव जाति के शुभचिन्तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को रोका है। साधनों को

सुरक्षित रखने, उनके विकास में योगदान देने और उनसे सबको लाभ पहुंचाने की शिक्षा दी है। ऐसा करने पर हम उन संपदाओं से स्वयं भी लाभ उठाएंगे और दूसरों को भी लाभ उठाने का अवसर देंगे, क्योंकि रब की पैदा की हुई हर चीज़ पर सबका समान अधिकार है। सिर्फ़ अपने हित के लिए हम दूसरों का अधिकार नहीं छीनेंगे। जब यह भावना मनुष्य में पैदा होगी तभी दुनिया में सुख-चैन की स्थापना हो सकती है, पर्यावरण में फैल रहे प्रदूषण पर नियंत्रण किया जा सकता है।

आज पर्यावरण के प्रदूषण का मुख्य कारण न सिर्फ़ अशिक्षा और अज्ञानता है, बल्कि ज़ियादा से ज़ियादा धन कमाने की होड़ में प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन भी है।

नोट: मैंने यह लेख "हमारी पोथी" भाग पाँच में पढ़ा था, आज कल की परिस्थिति में इस लेख के प्रसारण को आवश्यक समझते हुए सच्चा राही में प्रकाशन हेतु प्रस्तुत किया।

बोरण्डी में इस्लाम और मुसलमान

—वसी अहमद नदवी

परिचय तथा स्थित स्थान:-

बोरण्डी महाद्वीप अफ्रीका के बीच में एक छोटा सा लोकतांत्रिक देश है, "बोजो मबरा" यहां का प्रसिद्ध नगर है और यही उस की राजधानी है, इस छोटे देश की जनसंख्या 1,08,88,321 (एक करोड़, आठ लाख, अठ्ठासी हजार, तीन सौ इक्कीस) है। ईसाई बहुसंख्यक हैं, मुसलमानों की संख्या ईसाइयों से कम परन्तु भारी है।

बीसवीं शताब्दी के अन्त में यह जर्मन साम्राज्य के अधीन था, यहां इस्लाम, महाद्वीप अफ्रीका में अरब देशों से आने वाले व्यापारियों द्वारा पहुंचा, और उसी समय यहां इस्लाम प्रसारण के केन्द्र स्थापित हुए, जो यहां के लोगों के लिए सत्यमार्ग प्राप्ति का साधन बने, यह इस्लामिक केन्द्र यद्यपि दीन प्रसारण के साधन बहुत कम रखते थे फिर भी दीन के प्रसारण में बहुत आगे थे और बहुत सचेत रहते थे। उन केन्द्रों

का बोरण्डी के जनसाधारण से अच्छा सम्बन्ध था और यह संस्थायें बहुत ही सरल तथा तत्त्वदर्शित शैली में उन तक दीन पहुंचाती थीं।

बोरण्डी में इस्लाम का आरम्भ:-

इस में सन्देह नहीं कि बोरण्डी में इस्लाम पूर्वी अफ्रीका के मार्ग से आया, जहां इस्लाम प्रचारकों तथा व्यापारियों का आना जाना रहता था, जंजबार के शासकों के काल में यहां इस्लाम फला फूला और उस को उन्नति मिली और व्यापारियों ने जो इस्लाम प्रचारक भी थे मध्य अफ्रीका के पूरब में स्थाई केन्द्र स्थापित कर लिए, उन्हीं व्यापारियों का एक गिरोह तनजानिया की राजधानी में निवास किये हुए था, जिस ने तनजानिया सागर से गुजरते हुए नाव द्वारा बोरण्डी में "रोजा" स्थान पर अपना पड़ाव डाला, यह स्थान आज तक बन्दरगाह (पोत स्थान) के तौर पर प्रसिद्ध है, इसी स्थान पर मुसलमानों ने यहां

—हिन्दी इम्ला: हुसैन अहमद

के अधिकारियों से कुछ समझौते किये और फिर तनजानिया के उत्तरी भाग में इस्लाम के प्रसारण में लग गये, तनजानिया का यही उत्तरी भाग आज "बोरण्डी" के नाम से जाना जाता है अपितु मुसलमानों से धर्म प्रसारण का काम "जाइरे" तक पहुंच चुका था परन्तु शीघ्र ही बिलजियम, जर्मन तथा ब्रिटेन के साम्राज्य इस्लाम प्रसारण के इस काम में रुकावट डालने लगे और उन्हों ने इस क्षेत्र को परस्पर बाँट लिया प्रणाम स्वरूप "बोरण्डी" जर्मन के अंतर्गत हो गया। मध्य अफ्रीका में इस्लाम के स्थान पर ईसाई मिशन वाले साम्राज्य के संरक्षण में सक्रिय हो गये और धीरे धीरे इन ईसाइयों ने मुसलमानों के लिए कठिनाइयां पैदा करना आरम्भ कर दिया और उन के इस इस्लाम प्रसारण के कार्य को लगभग रोक दिया, पहले विश्व युद्ध के पश्चात बिलजियम ने "बोरण्डी" पर अपना अधिकार जमा लिया,

उस समय वहां के मुसलमानों को बड़े चैलेंज का सामना करना पड़ा यहां तक कि निकट के मित्रों तथा संबंधियों से मिलने पर भी प्रतिबन्ध लग गया और मुसलमानों की कुछ ज़मीन ईसाईयों को दे दी गई तथा शिक्षा विभाग पर भी उनको अधिकार दे दिया गया। जिसके कारण मुसलमानों ने अपने बच्चों को ईसाई मिशनरी के स्कूलों में भेजने से इन्कार कर दिया और ईसाईयों से शिक्षा प्राप्त करने के बजाये जीवन की दौड़ में पीछे रहने ही को पसन्द किया परिणाम स्वरूप उन की आर्थिक दशा प्रभावित हो गई।

मुस्लिम क्षेत्र:- बोरण्डी की राजधानी में मुसलमान एकता तथा मेल मिलाप के साथ रह रहे हैं और "होतु" जाति के क्षेत्र में तेजी से फैल रहे हैं। "होतु" बोरण्डी का बहु संख्यकों का क्षेत्र है, जिस के चौथाई भाग में मुसलमान रहते हैं, यहां स्थानीय मुसलमानों के अतिरिक्त बंगला देश, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और अरबी मुसलमान भी रहते हैं,

जो बोरण्डी के अधिकांश क्षेत्र में फैल रहे हैं।

इस्लामिक समितियाँ:-

बीते कुछ वर्षों में यहां के मुसलमान जागरूक हुए हैं, जिसका सुबूत बोरण्डी में कई समितियों की स्थापना से मिलता है, उन में से एक "अलजमईयतुल इस्लामिया" है, यह समिति 1943 ई0 में बिलजियम काल में स्थापित हुई थी परन्तु उस समय के शासन में उस को स्वीकृत देने से इन्कार कर दिया गया था उस के अतिरिक्त कई समितियां और भी हैं जैसे "अलजमईयतुल इफ्रीकिया" "अलजमईयतुल अरबीयतुल इस्लामिया", जमईयतुल दावतुल इस्लामिया" और अभी जल्द ही "अर-राबिततुल इस्लामिया" की स्थापना हुई है जिस में कई समितियां सम्मिलित हैं।

बोरण्डी के मदरस:-

बोरण्डी के मुसलमानों ने विभिन्न मदरसे स्थापित कर रखे हैं, बोरण्डी की राजधानी में एक प्रारंभिक प्राइवेट मदरसा "मदरसतुत-तौहीद" है, जिस के संस्थापक, राजधानी की जामे मस्जिद के इमाम शैख यहया हैं, इस

मदरसे में पवित्र कुर्आन तथा अरबी भाषा की शिक्षा दी जाती है, राजधानी में इस के अतिरिक्त और भी कई मदरसे हैं, कुछ दिनों पहले शासन ने इन सभी मदरसों को अपने अंतर्गत कर लिया, इस समय इन मदरसों के पाठ्य क्रम सुदृढ़ करने, अध्यापकों के बढ़ाने तथा अनुवादित इस्लामिक पुस्तकों की अत्यंत आवश्यकता है, राबि-तए आलमे इस्लामी की ओर से नव मुस्लिमों की शिक्षा तथा प्रशिक्षण के लिए जब तब प्रोग्राम भी होते रहते हैं।

मस्जिदें और उनकी सेवार्यें:-

राजधानी में सात मस्जिदें हैं, जिन में वहां के मुसलमान नमाज़ें अदा करते हैं इन मस्जिदों में सबसे बड़ी मस्जिद जामे मस्जिद है इस प्रकार अन्य नगरों के मुस्लिम मुहल्लों में मस्जिदें हैं, बोरण्डी के मुसलमानों को, ईसाई मिशनरियों की ओर से हमेशा कठिनाईयों का सामना रहता है। उन मिशनरियों को अत्यधिक सरलताएं तथा सहयोग प्रदान सच्चा राही अक्टूबर 2016

किये जाते हैं, जिसके कारण उन के लिए मिशन के काम सरल हैं और मुसलमानों के लिए कठिनाईयां हैं फिर भी मुसलमान अपने इस्लामिक विश्वासों पर जमे हुए हैं, मस्लकी मतभेदों के कारण विभिन्न इस्लामी जमाअतों के सबब मुसलमानों की एकता प्रभावित हो रही है, सम्मिलित बोर्ड, जिस का काम अफ्रीका में इस्लाम प्रसारण के केन्द्र स्थापित करना है, बोरण्डी में उस ने एक इस्लामिक सेंटर स्थापित किया है, जिस ने स्त्रियों के लिए इस्लामिक शिक्षा, इस्लामिक सभ्यता (शरई पर्दा आदि) तथा गैर इस्लामी विचारों से सुरक्षित रखने वाले कोर्स की पढ़ाई आरम्भ की है।

माँगें:-

इस्लामिक शिक्षा के पाठ्यक्रम का प्रसारण, अध्यापकों की पूर्ति, पाठ्यक्रम की पुस्तकों की उपलब्धता, कुछ सेकेंड्री मदरसों की स्थापना, इस्लाम के प्रसारण के काम में फौलाव, फ्रांसीसी भाषा जानने वाले प्रचारकों

की उपलब्धता, इस्लामिक यूनिवर्सिटियों में बच्चों को स्कालर्शिप, बोरण्डी में विभिन्न मत की इस्लामी जमाअतों से पैदा होने वाली अव्यवस्था पर कन्ट्रोल तथा मुस्लिम स्त्रियों की शिक्षा पर पूरा ध्यान देना यहां के शासन से मुसलमानों की माँगें हैं।



जनता की चिन्ता.....

लोग हैं सबकी देखभाल करना मेरा कर्तव्य है। मैं अल्लाह के सामने बैठे निर्धनों, पीड़ितों, असहायों, बंधकों और यात्रियों के बारे में सोच रहा था, विभिन्न प्रदेशों में रहने वालों के बारे में चिन्तन-मनन कर रहा था, ऐसे लोगों के बारे में सोच रहा था जिनको अल्लाह ने खूब औलाद दी लेकिन उनकी आय बहुत कम है, गुजर-बसर सम्भव नहीं। फातिमा! कयामत में अल्लाह मुझ से उनके बारे में पूछेगा, और जानती हो अल्लाह के दरबार में उन पीड़ितों की ओर से वकील कौन होगा?

वकील होंगे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! उस अवसर पर मेरा हाल क्या होगा? बस यही सोच कर रो रहा हूँ।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज रह0 को इस की बड़ी चिन्ता रहती थी कि जनता निर्धनता और मुखमरी से छुटकारा पाये। इसीलिए आप ने मदीने से आने वालों से उन फकीरों के बारे में पूछा था।

इतिहास कारों ने लिखा है कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज रह0 के शासनकाल में व्यवस्था प्रबन्ध चौकस रहने से आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी हो गई थी कि लोग जकात (धर्मादाय) की रकम पात्रों को देने के लिए निकलते मगर जकात का कोई पात्र न मिलता। ये इस्लामी शासन व्यवस्था की बेहतरीन मिसाल है। यदि आज इसे ज्यों का त्यों लागू कर दिया जाए तो जो अर्थ जगत में हाय-तौबा मची है उस पर पूर्ण विराम लग जाए।



सच्चा राही अक्तूबर 2016

अमीरुल मोमिनीन अब्दुल्लाह बिन जुबैर

—इदारा

रिश्ते:- आप की दादी हज़रत सफीया रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी थीं। उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा (रज़िअल्लाहु अन्हा) आप के वालिद की फूफी थीं। आप की माँ हज़रत अस्मा रज़ि० हज़रत अबू बक्र रज़ि० की बेटी थीं। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आईश रज़ि० आप की ख़ाला थीं।

सन् 1 हिज़्री में मदीना तय्यबा में पैदा हुए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गोद में ले कर बरकत की दुआ की और खज़ूर चबा कर आप के मुँह में दी। आठ साल की उम्र में हुज़ूर से बैअत की।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर दौरे सिद्दीकी में कम उम्र थे, हज़रत उमर रज़ि० के आखिरी दौर में जवान हो चुके थे और जंगे यरमूक में अपने वालिद के साथ हिस्सा लिया था। हज़रत उस्मान रज़ि० के दौर में जंगे तराबलस में आप का बड़ा कारनामा है। हज़रत

उस्मान रज़ि० के आखिरी दौर में जब ज़बरदस्त फित्ना उठा और आप का घर घेर लिया गया, इस पर भी हज़रत उस्मान रज़ि० ने फित्ना परदाजों के खिलाफ जंग की इजाज़त न दी उस वक्त दूसरे जाँ बाज़ साहबज़ादों के साथ हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर भी हज़रत उस्मान रज़ि० की हिफाज़त में आप के दरवाज़े पर पहरा दे रहे थे। लेकिन आखिरकार हज़रत उस्मान रज़ि० की शहादत हो गई।

हज़रत तलहा, हज़रत जुबैर वगैरह जब हज़रत आइशा रज़ि० की कियादत में हज़रत अली रज़ि० से हज़रत उस्मान के कातिलों को सज़ा देने का मुतालबा ले कर हज़रत अली के पास आये और सबाइयों की मक्कारी से सख्त जंग होने लगी तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने ख़ाला की हिफाज़त में बड़ी जाँबाज़ी का सुबूत दिया और लगभग चालीस जख्म खाये। इस जंग में दस हज़ार जानें गईं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने हज़रत मुआविया से बैअत कर ली थी और उन के पूरे दौर में उन के साथ रहे लेकिन जब आखिर जमाने में हज़रत मुआविया रज़ि० ने अपने बेटे यज़ीद को वली अहद बनाया तो आप ने मुखालफत की उस वक्त मुखालफत करने वालों में पांच लोग थे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र, हज़रत हुसैन बिन अली रज़ि०, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० हज़रत मुआविया ने इन पांचों बुजुर्गों को मदीना तय्यबा में तलब कर के कहा।

मैं आप लोगों के साथ अच्छा सुलूक करता हूँ और आप सब को अपना समझता हूँ, यज़ीद आप का भाई है आप उसे ख़लीफा मान लें, बाकी इन्तिजामे हुकूमत आप लोग ही चलाएंगे, सभी बुजुर्ग खामोश रहे, अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० को इन सब ने बातचीत के लिए अपना अमीर बनाया था उन्होंने सच्चा राही अक्टूबर 2016

कहा आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरह मुआमले को छोड़ दें, मुसलमान अपना खलीफ़ा खुद चुन लेंगे, हज़रत अमीर मुआविया ने जवाब दिया कि अब हज़रत अबू बक्र जैसा कोई नहीं है जिस पर सारे मुसलमान मुत्तफ़िक हो सकें इस में तो बड़े खून ख़राबे का अन्देशा है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने कहा फिर हज़रत अबू बक्र की तरह अपने खानदान से अलग किसी को मुकर्रर कीजिए, लेकिन हज़रत अमीर मुआविया अपने इजतिहाद और अपनी राय व फ़ैसले पर कायम रहे यहां तक कि उन का इन्तिकाल हो गया और यज़ीद तख़्त पर बैठ गया जैसे भी हो लोगों ने यज़ीद की बैअत कर ली उस वक़्त पचास से ज़ियादा सहाब-ए-किराम मौजूद थे, उन में से सिर्फ़ दो ने यज़ीद की, बैअत न की हज़रत हुसैन और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि०, मालूम रहे कि शुरुअ के पाँच मुखालिफ़ीन में से हज़रत अब्दुर्रहमान का इन्तिकाल हो चुका था।

हज़रत हुसैन और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० दोनों बुजुर्ग मदीने से मक्का चले गये थे।

मक्के में हज़रत हुसैन रज़ि० को कूफियों ने जिस तरह दगा दिया, और धोखा दे कर बुलाया उस का बयान दिसम्बर 2011 के अंक में लिखा जा चुका है। मालूम रहे कि जब हज़रत हुसैन रज़ि० कूफ़ा जा रहे थे तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने यह भी कहा था कि मैं आप के हाथ पर बैअत करता हूँ, आप यहीं रह कर खिलाफ़त हासिल करने की कोशिश कीजिए मैं आप की पूरी मदद करूंगा मगर हज़रत हुसैन रज़ि० ने अपना इरादा न बदला यहां तक कि शहादत हो गई। अब यज़ीद के मुखालिफ़ीन में सिर्फ़ अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० थे। यज़ीद ने दो बार मक्का मुकर्रमा वफ़द भेज कर अब्दुल्लाह बिन जुबैर से बैअत चाही मगर आप ने इन्कार कर दिया, इधर मक्का और मदीना वालों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर के हाथ पर खिलाफ़त की बैअत कर ली। चुनांचि

मदीना वालों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर का ईमा पा कर उमवी हुक्काम को मदीने से निकाल दिया यह बात यज़ीद को बहुत नागवार हुई और उस ने मुस्लिम बिन उक्बा की सरबराही में 12 हज़ार की फौज मदीना भेज दी। मुस्लिम बिन उक्बा ने मदीने में एलान किया कि सब लोग यज़ीद की इताअत करें इस के लिए तीन दिन का मौक़ा दिया जा रहा है वरना लड़ने को तैयार हो जाएं। मदीना वाले यज़ीद की इताअत को तैयार न हुए और तीन दिन बाद लड़ गये मगर फौज का मुकाबला न कर सके तो फौज ने मदीने वालों पर वह जुल्म ढाया कि खुदा की पनाह इसी को हर्षा का वाकिया कहा जाता है इस ज़ालिमाना वाकिए में हज़रत अली और हज़रत उमर के खानदान वालों को कोई नुक़सान नहीं पहुंचा इसलिए कि वह इस साजिश से अलग रहे।

मआजल्लाह मदीने को तबाह करके मुस्लिम बिन उक्बा मक्का मुकर्रमा हज़रत जुबैर की तरफ बढ़ा लेकिन रास्ते में जालिम मुस्लिम बिन सच्चा राही अक्तूबर 2016

उक्बा मर गया और फौज की कमान हसीन बिन नुमैर ने संभाली हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर हरम में क़िला बन्द हो गये, हसीन ने क़ुबैस पहाड़ी पर मिनजनीक़ गाड़ कर हरम पर आग व पत्थर बरसाता रहा इसी दौरान यजीद चल बसा और उसकी ख़बर मक्के पहुंची तो लड़ाई रुक गई।

जब लड़ाई रुक गई तो हसीन बिन नुमैर ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० को कहलाया कि जब हमारे बादशाह का इन्तिकाल हो चुका है तो अब किस के लिए लड़ें? अब हरम के दरवाज़े खोल दीजिए, अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने हरम खोल दिया और शामी फौज ने तवाफ़ किया। हसीन हज़रत अब्दुल्लाह से मिला और कहा आप मेरे साथ शाम चले मैदान साफ़ है, हम शामियों और उमवियों से आप की बैअत करवायेंगे और आप पूरी ममलिकत के खलीफ़ा मान लिये जाएंगे लेकिन आप ने शाम जाने से इन्कार कर दिया और हसीन अपनी फौज के साथ शाम वापस चला गया।

यजीद की मौत के बाद उमवियों ने उस के बेटे मुआविया सानी को तख़्त पर बिठाया यह बड़ा नेक दिल था राज-पाट के जुल्मों और खून खराबों से उसे नफ़रत थी। बाप के दौर में जो कुछ देखा था उससे वह बे जार था उस ने दो तीन महीने बाद तख़्त छोड़ दिया और एकान्त में जा बैठा और जल्द ही उसका इन्तिकाल हो गया अब अब्दुल्लाह बिन जुबैर की बैअत के बाद अहले मदीना जो मजबूरन यजीद के ताबे हो गये थे सब इब्ने जुबैर के हामी हो गये, इब्ने जुबैर ने हुक्म दिया कि मदीने में जो उमवी हैं वह मदीना छोड़ दें। मरवान जो बनी उमय्या की तरफ से मदीने का गवर्नर था अब वह भी अब्दुल्लाह बिन जुबैर की इताअत को तैयार था मगर इब्ने जुबैर ने उसको भी मदीने से निकल जाने का हुक्म दिया मजबूरन वह अपने बीमार बेटे अब्दुल मलिक के साथ शाम चला गया।

शाम में उस वक़्त तीन ग्रुप थे एक ग्रुप ख़ालिद बिन यजीद का था दूसरा अम्र

बिन सईद का, तीसरा इब्ने जुबैर का, उमवियों ने तय किया कि मरवान खलीफ़ा हो और उस के बाद ख़ालिद और अम्र वली अहद हों इस पर उमवियों ने इत्तेफ़ाक़ किया और मरवान और इब्ने जुबैर के उम्माल हुक्काम में मुकाबला शुरुअ हुआ उमवी ग़ालिब होने लगे और कूफ़ा दमिश्क़ और मिस्र उनके कब्ज़े में आ गये। मक्का मदीना और बसरा पर इब्ने जुबैर का कब्ज़ा रहा। उसी दौरान कूफ़ा से तव्वाबीन की जमाअत उठी, इन का कहना था कि हम लोगों ने हज़रत हुसैन रज़ि० का साथ न दे कर बड़ा गुनाह किया है अब हम तौबा करते हैं और कफ़ारे में हज़रत हुसैन रज़ि० के कातिलों को क़त्ल करेंगे यह उमवी हुक्ूमत से लड़ गये लेकिन मरवान ने उनकी ताकत तोड़ दी मगर 65 हिज़्री में मरवान का इन्तिकाल हो गया जिसका सबब ये बताया जाता है कि उसने ख़ालिद की मां यजीद की बीवी से निकाह कर लिया था लेकिन जब मरवान ने ख़ालिद की वली अहदी को सल्ब कर के अपने बेटे

अब्दुल मलिक को वली अहद मुकर्रर किया तो खालिद की मां ने मरवान को ज़हर दे कर या रात को सोते में गला घोंट कर मार डाला मरवान के बाद उस का बेटा अब्दुल मलिक तख्त पर बैठा।

इसी दौरान कूफा से एक फित्ना परदाज शख्स मुख्तार बिन अबू उबैदा सकफी उठा यह बड़ा चालाक था कुछ दिनों तक अब्दुल्लाह बिन जुबैर से दोस्ती गांठी फिर हज़रत हुसैन रज़ि० के कातिलों से बदला लेने का झांसा दे कर तव्वाबीन की बची खुची जमाअत का सरबराह बन गया यह शख्स बड़ा बद अकीदा था यह दावा करता था कि हज़रत जिब्रील उस के पास आते हैं। इस ने चालाकी से हज़रत जैनुल आबिदीन को अपनाना चाहा मगर उन्होंने उसे मुंह न लगाया फिर इस ने मुहम्मद बिन हनफीया को चालाकी से अपना सरपरस्त बना लिया, मुहम्मद बिन हनफीया ने अब्दुल्लाह बिन जुबैर की बैअत न की थी न करना चाहते थे लिहाजा उन के जोर व जियादती से बचने के

लिए मुख्तार की सरपरस्ती कबूल कर ली अब मुख्तार का जोर बहुत बढ़ गया था उमवियों से बराबर टकराव रहा, इस का यह कारनामा ज़रूर है कि इसने हज़रत हुसैन रज़ि० के सभी कातिलों को चुन चुन कर कत्ल किया, उसने दीनी जज्बे से नहीं हुकूमत हासिल करने के लिए किया आखिर कार मुसअब बिन जुबैर के दस्ते ने उसे कत्ल कर दिया कत्ल से पहले उसने इकरार कर लिया कि मैंने जो कुछ किया दुन्या हासिल करने के लिए किया, जैसा कि तारीख की किताबों में दर्ज है।

मुख्तार, अब्दुल्लाह बिन जुबैर और अब्दुल मलिक दोनों के लिए मुसीबत बना हुआ था, उस के कत्ल के बाद अब अब्दुल मलिक ने इब्ने जुबैर की ताकत तोड़ने की तरफ पूरी तवज्जुह दी। मुसअब बिन जुबैर जो बसरा के अमीर थे एक लड़ाई में अपने बेटे ईसा के साथ शहीद हो गये इस तरह अब्दुल्लाह बिन जुबैर की ताकत बहुत कमज़ोर हो गई। यह भी अजीब बात है कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास

और मुहम्मद बिन हनफीया ने अब्दुल्लाह बिन जुबैर से बैअत न की थी और उनसे खफ़ा हो कर मक्का छोड़ कर ताइफ चले गये थे, याद रहे कि इन दोनों बुजुर्गों ने हर्षा के वाकिये में भी इब्ने जुबैर के हामियों का साथ न दिया था। अब अब्दुल मलिक ने इब्ने जुबैर को अपने रास्ते से हटाने का तहय्या कर लिया और जालिम हज्जाज को एक फौज के साथ रवाना किया हज्जाज ने मक्का मुकर्रमा को घेर लिया और मिनजनीक से आग और पत्थर बरसाता रहा। बाहर से रसद का आना बन्द कर दिया, यह घेरा जीकादा 72 हिज़्री में डाला गया और कई महीनों तक रहा। यहां तक कि मक्का वाले मूखों मरने लगे अब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथियों के लिए बड़ी तंगी हो गई तो अब्दुल्लाह बिन जुबैर के दो बेटे हम्जा और हबीब भी हज्जाज से जा मिले, अब हज़रत इब्ने जुबैर की ताकत बिल्कुल टूट चुकी थी 100 वर्ष की बूढ़ी माँ को सब कुछ बता कर उनका मशवरा चाहा, बहादुर माँ अस्मा बिनते अबू बक्र ने कहा

बेटे अगर तुम नाहक पर थे और उमवियों से लड़ कर अपने हिमायतियों का खून बहाया तो तुम से बुरा कोई नहीं, लेकिन अगर तुम हक पर थे तो लोगों के साथ छोड़ देने की परवा न करो बहादुराना लड़ो काम्याब होंगे तो खुशी होगी शहीद हो गये तो सब करूंगी, फिर माँ की दुआएं ले कर आए और जम कर मुकाबला करते हुए जुमादलउख़रा 73 हिजरी में शहीद हो गये इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

शहादत के बाद जालिम हज्जाज ने सर कटी लाश एक बुलन्दी पर लटका दी ताकि लोग इबरत हासिल करें कि बादशाहे वक्त की मुखालिफत करने वालों का यही अंजाम किया जाएगा। लाश की जानिब से अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० गुज़रे तो लाश को सलाम किया और कहा अबू हबीब तुम रोज़े रखते थे, नमाज़ें पढ़ते थे सिल-ए-रहमी करते थे, मैंने तुम को मुखालफत से रोका था, उन की बूढ़ी माँ का उधर से गुज़र हुआ तो ना मुँह पीटा ना सीना बल्कि कहा यह सवार अभी अपनी

सवारी पर से नहीं उतरा यह सब कुछ अब्दुल मलिक को मालूम हुआ तो उसने हज्जाज को सख्त खत लिखा और लाश दफ़न के लिए देने का हुक्म दिया चुनांचे लाश माँ को दे दी गई और माँ ने लाश को दफ़न करवाया।

हज़रत मुआविया रज़ि० की यह बात सौ फीसद सही थी कि अगर वह अपने बाद खलीफा का इन्तिखाब मुसलमानों पर छोड़ देते तो हालात ऐसे थे कि किसी एक पर इत्तिफाक मुश्किल था। और ख़ूब इख़तिलाफ़ होता।

पाँच हज़रात ने यजीद की वली अहदी की मुखालिफत की थी उन में से हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० वफात पा चुके थे बाकी चार में से दो मैदान में आये मगर दोनों अलग-अलग रहे हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर की पेश कश पर भी हज़रत हुसैन रज़ि० मक्के वालों से बैअत पर राजी न हुए और कूफियों पर भरोसा कर के कूफे का कस्द कर लिया। अब्दुल्लाह बिन जुबैर, अब्दुल्लाह बिन अब्बास और अब्दुल्लाह बिन उमर ने

हमदर्दी में कूफा जाने से तो रोका मगर साथ न दिया, यहां तक उन के भाई मुहम्मद बिन हनफीया ने भी साथ न दिया तो कैसे उम्मीद की जा सकती थी कि उन हालात में ये सारे मुसलमान किसी एक पर मुत्तफिक हो जाते। हज़रत मुआविया रज़ि० का अन्देशा बिल्कुल सही था। बड़े हैरत की बात यह है कि हज़रत हुसैन और इब्ने जुबैर रज़ि० यजीद की मुखालिफत में दोनों का मौकिफ़ एक था फिर कूफियों की बेवफाई से हज़रत हुसैन रज़ि० कूफे की इमारत न पा सके और शहीद हो गये लेकिन इब्ने जुबैर रज़ि० ने तो बनी उमय्या की चूले हिला दीं और सात साल खिलाफत कर के दिखा दिया और आखिर में जालिम हज्जाज के हाथों शहीद हो गये मगर इस मजलूम शहीद को कभी उम्मत के उलमा अपनी तहरीरों और तकरीरों में जिक्र तक नहीं लाते कोई याद रखे या भूला दे उन का मरतबा अल्लाह के यहां बुलन्द है। और अल्लाह उन से राजी है।



व्यायाम (वर्जित)

—इदारा

स्वास्थ्य जो चाहे तू बिन दाम
नियम पूर्वक कर व्यायाम॥
प्रतिदिन परिश्रम थोड़ी देर
लाएगा अच्छे परिणाम॥

स्वस्थ्य जीवन के लिए जहां उचित आहार और उचित जलवायु की आवश्यकता है वहीं उचित शारीरिक श्रम भी आवश्यक है, जिन लोगों का काम बैठे-बैठे करने का है जैसे, क्लर्क, एकाउन्टेन्ट, कैशियर, दुकान के काउन्टर पर बैठने वाला आदि इसी प्रकार दूसरे लोग जो न तो अधिक चलते फिरते हैं न उनके शरीर के अंग श्रम का काम करते हैं, बस कलम चलाते हैं, लेख लिखते हैं, कविता लिखते हैं, हिसाब किताब लिखते हैं, कम्प्यूटर पर उंगलियां चलाते हैं, नोट गिनते हैं आदि, ऐसे लोग अच्छा खाते हैं, चिकनाई वाले स्वादिष्ट आहार लेते हैं यदि ऐसे लोग प्रतिदिन कुछ व्यायाम न करेंगे तो अवश्य उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा। कब्ज रहने लगे गा, अफारा (नफ़स) होने लगे गा, खट्टी डकारें आने लगेंगीं, बवासीर

हो जाएगी इस के परिणाम में दूसरे रोग भी आ लगेगे।

ऐसे तमाम लोगों को चाहिए कि नियमित रूप से कुछ व्यायाम अपनाएं, यदि मुस्लिम हैं तो सूरज निकलने से एक घण्टा पहले उठें पाखाना पेशाब को जाएं, अच्छी तरह वुजू करें, वुजू करने में मिस्वाक (दातून) या बुरुश से दांतों को अच्छी तरह साफ करें, ग़रारा कर के हल्क (गले का अन्दरूनी भाग) साफ करें फिर मर्द हों तो मस्जिद जा कर जमाअत से फ़ज़ की नमाज़ पढ़ें, सम्भव हो तो थोड़ी देर, कुर्आन की तिलावत करें, फिर व्यायाम को निकलें, स्त्रियां घर में नमाज़ पढ़ कर व्यायाम की तैयारी करें। ग़ैर मुस्लिम भाई सौचालय के पश्चात अच्छी तरह कुल्ला करें दांत साफ़ करके थोड़ी देर अपने निर्माता को याद करें फिर व्यायाम को निकलें। याद रहे व्यायाम न खाली पेट करें न भरे पेट। अतः संभव हो तो व्यायाम से पहले एक गिलास उबाला

दूध पीलें, या एक दो केले खा लें, या एक चपाती नमक या गुड़ से खा कर पानी पी लें, उसके दस मिनट बाद व्यायाम करें।

व्यायाम:- व्यायाम बहुत प्रकार के होते हैं जैसे डंड, बैठक, दौड़, मुक्दर हिलाना, कबड्डी खेलना, फुटबाल खेलना, वालीबाल खेलना, बैट मिन्टन खेलना आदि, जिस व्यायाम की सुविधा हो और जिस में रुचि हो उसे अपनाएं।

खेल वाले व्यायामों में पार्टी चाहिए जो हर एक के लिए सम्भव नहीं, सब से सरल और लाभदायक व्यायाम खुले में दौड़ लगाना या तेज़ चलना है, स्त्रियां इसे अपने घर के आंगन में या छत पर कर सकती हैं।

व्यायाम न इतना कम हो कि शरीर को मेहनत ही न करना पड़े न इतना अधिक हो कि आदमी को थक कर लेटना पड़े, व्यायाम आधे घण्टे से कम ही में रहे अधिक न हो। डंड बैठक लगाना हो तो 100 बैठकें और दस डंड पर्याप्त हैं,

मगर साथ में पांच सात मिनट की दौड़ भी हो, अब मुग़दर का रवाज़ नहीं रहा वरना 15 मिनट तक मुग़दर हिलाना प्रयाप्त होता इसके साथ भी पाँच दस मिनट की दौड़ होना चाहिए।

यह डंड बैठक के व्यायाम भारत वासियों ही के निकाले हुए हैं। यह किस की इजाद है यह पता लगाना कठिन है परन्तु मेरी जानकारी में डंड बैठक दूसरे देशों में नहीं पाये जाते। प्राचीन काल में भारत में अधिकांश लोग गाँवों में रहते थे, पशु पालते थे, पशुओं को चराने, खिलाने पिलाने में शारीरिक श्रम करना पड़ता, खेती करने वालों में खेती के कामों में हार्ड वर्क करते उनको व्यायाम की आवश्यकता न थी, अलबत्ता गाँवों के जो लोग स्वयं मेहनत न करते दूसरों से काम लेते उनको व्यायाम की आवश्यकता पड़ती और वह डंड बैठक ही लगाते, दौड़ भी लगाते, मुग़दर भी हिलाते, कुश्ती भी लड़ते, तैराकी भी करते, फरी गत्का भी खेलते और दूसरे खेल भी खेलते, नगर के

रहने वाले भी कोई न कोई व्यायाम अपनाते, यह सारे व्यायाम भारतीय हैं, प्राचीन काल से चले आ रहे हैं, रही बात योगा की जिस का आज कल बड़ा प्रोपैगन्डा है निःसंदेह यह भारत की देन है परन्तु यह भारत में सदैव साधू संतों का मशगला (कार्य) रहा या पंडितों का, भारत के प्राचीन काल के सेनानियों में यह योगा न था, राणा प्रताप और शिवा जी के यहां इस का वर्णन नहीं मिलता।

हो सकता है योगा के कुछ आसन कुछ रोगों को दूर करने तथा कुछ रोगों से बचाए रखने में लाभ दायक हों परन्तु कुछ तो बड़े खतरनाक हैं जैसे कपड़े की लम्बी पट्टी निगल कर उगलना और गुदा के मार्ग से गर्म पानी चढ़ाना आदि। इसी प्रकार कुछ आसन केवल हिन्दू धर्म से सम्बन्ध रखते हैं तथा इस्लाम और ईसाई विश्वास से टकराते हैं जैसे सूर्य नमस्कार अतः चाहिए कि आम जनता से विशेष कर गैर हिन्दू जनता से योगा के सब आसन न करवाये जाएं, उनको डंड बैठक, दौड़ आदि जो

भारतीय ही व्यायाम हैं करने दिया जाए और शारीरिक व्यायाम में वाली बाल, फुटबाल बैट मिन्टन आदि खेल में भाग लेने का परामर्श दिया जाये, सामूहिक अनुशासन के व्यायाम में सैनिक पी0टी0 बहुत अच्छा व्यायाम है।

आज कल मधुमेह (सुगर) का रोग आम है यह रोग जिस को लग जाता है जीवन भर साथ नहीं छोड़ता, दवा इस को काबू में तो रखती है परन्तु रोग साथ नहीं छोड़ता और कितनों को तो जवानी ही में मौत तक पहुंचा देता है। अल्लाह तआला इस दुखद रोग से सुरक्षा प्रदान करे। देखने में यह आ रहा है कि जो लोग जवानी में ही शारीरिक श्रम करने वाले कामों में रहते हैं जैसे मजदूर, किसान आदि ऐसे लोग सुगर रोग से बचे रहते हैं, अतः शारीरिक श्रम न करने वालों के लिए मधुमेह से सुरक्षा के लिए सुबह शाम अपनी पसन्द का उचित व्यायाम आवश्यक है।

आजकल बहुत से लोग फेफड़ों की टी0बी0 से ग्रस्त हो जाते हैं यह रोग भी

घातक होता है। प्रारंभिक स्थिति में तो इसका उचित इलाज किया जाए तो रोगी ठीक हो जाता है, यह रोग साधारण 12 से 30 वर्ष की आयु में लगता है अतः यदि 12 से 30 वर्ष की आयु के युवक फेफड़ों का व्यायाम अपनाएं तो फेफड़ों की टी0बी0 से सुरक्षित रहें हम यहां हमदर्द संस्था की प्रसिद्ध पुस्तक देहाती मुआलिज से फेफड़ों के व्यायाम की विधि लिखते हैं और युवकों से अनुरोध है कि वह इसे अपना कर लाभ उठाएं, यह भी योगा ही कि एक किस्म है:—

1. खुली जगह पर ढीले वस्त्रों में खड़े हों, दोनो हाथ तान कर ऊपर उठायें, दोनों पैरों के बीच उचित दूरी रखें, सांस अन्दर को खींचें, खूब खींचें, पेट आगे को फुलाएं जितनी देर तक सांस रोक सकें रोकें, फिर धीरे धीरे नाक द्वारा सांस बाहर निकालें, पेट हाथ से दबायें, मुँह बन्द रहना चाहिए, ऐसा तीन बार करें और तीन रोज तक अभ्यास करें सांस रोकने का समय बढ़ाने का प्रयास करें। यह फेफड़ों के अन्दर के नीचे के भाग का व्यायाम है।

2. चौथे दिन दूसरी विधि का अभ्यास करें। खुली जगह पर सीधे खड़े हों मुँह बन्द रखें नाक से सांस अन्दर खींचें खूब खींचें फिर सांस रोकने का प्रयास करें जितनी देर तक रोक सकें रोकें, फिर धीरे-धीरे सांस बाहर निकालें। इस अभ्यास से फेफड़ों के अन्दर के बीच के भाग का व्यायाम हो जाएगा अब दोनों व्यायाम प्रति दिन सुबह शाम करते रहें।

3. एक हफ्ते के पश्चात तीसरी विधि का अभ्यास करें। खुली जगह पर सीधे खड़े हों मुँह बन्द रखें, ऊपर का घड़ आगे को झुकाएं, सीना आगे को तानें गर्दन ऊपर को उठी रखें दोनों हाथ दोनों ओर लटकाए रखें, नाक द्वारा सांस अन्दर को खींचें और खूब खींचें सीना फुलाएं फिर सांस जितनी देर तक रोक सकें रोकें फिर धीरे धीरे नाक द्वारा सांस बाहर लाएं और सीने को दोनों हाथों से दबाएं, फिर सीधे खड़े हो जाएं इस अभ्यास से फेफड़ों के अन्दर के ऊपरी भाग का व्यायाम होगा।

यह तीनों अभ्यास केवल आठ मिनट में पूरे हो जाते

हैं यदि युवक लोग इसे अपनाएं तो फेफड़ों की टी0बी0 से सुरक्षित रह सकते हैं। स्त्रियां इसे अपने आंगन या छत पर कर सकती हैं, गर्भवती स्त्रियां यह व्यायाम न करें अपितु वह हल्का टहलने के अतिरिक्त कोई भी व्यायाम न करें। टी0बी0 के रोगी, दमा के रोगी, हृदय के रोगी अपितु किसी प्रकार के भी रोगी यह अभ्यास न करें, यह अभ्यास केवल स्वस्थ युवक ही करें बूढ़े लोग भी यह अभ्यास न करें। जिस युवक को यह अभ्यास करने में किसी प्रकार की हानि का आभास हो वह भी यह अभ्यास न करे। यह अभ्यास प्रतिदिन दो बार सुबह शाम करते रहना चाहिए।

याद रहे स्वस्थ रहने के लिए हर प्रकार के नशों से दूर रहना भी आवश्यक है, तम्बाकू किसी प्रकार न प्रयोग करें, न हुक्के में न चिलम में, न बीड़ी सिग्रेट में, न चूने के साथ, न पान में, न गुटके में, गाँजा, चरस, भंग, अफीम आदि से भी दूर रहें और मदिया पान को तो विष पान समझें। इस्लाम में तो नशा करने को महा पाप बताया गया है।

सच्चा राही अक्तूबर 2016

मुझे आखिरत (प्रलोक) तक जाना है

—मौ० अशरफ़ अली थानवी रह०

हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि एक बार ट्रेन से यात्रा कर रहे थे, उनको सहारनपुर से कानपुर जाना था, एक रेलवे गार्ड जो उन से श्रद्धा रखता था, स्टेशन पर उन से मिलने के लिए आया, उसी समय एक देहाती आदमी भी हज़रत से मिलने आ गया, उस ने गन्ने का एक गट्ठा हज़रत को उपहार में प्रस्तुत किया हज़रत ने उसे स्वीकार कर लिया और अपने साथी से कहा इस गट्ठे को तौला कर उसको बुक करा लो, गार्ड ने कहा: बुक करवाने की क्या जरूरत है? इस ट्रेन का जो गार्ड जा रहा है, मैं उस से कह देता हूँ, वह ख्याल रखेगा, हज़रत ने कहा कि मुझे आगे जाना है, गार्ड ने समझा कि हज़रत को आगे किसी स्टेशन पर कोई दूसरी ट्रेन पकड़नी है, उस ने कहा: कोई बात नहीं, मैं गार्ड को बता दूंगा, वह आगे वाले गार्ड से कह देगा

और आप को कोई कष्ट न होगा, हज़रत ने कहा: मुझे उस से भी आगे जाना है, गार्ड ने आश्चर्य से पूछा: आखिर आप कहां तक जाएंगे? हज़रत ने कुछ चुप रहने के बाद कहा "मुझे आखिरत तक जाना है, वहां तक कौन सा गार्ड मेरे साथ जाएगा"?।

यह व्यवहार केवल रेल की यात्रा का नहीं है, अपितु समस्त व्यवहारों का है, मनुष्य का हर व्यवहार आखिरत (अगले जीवन) से संबंधित है, इस संसार में कोई गार्ड आप का वक्ती तौर पर साथ दे सकता है, परन्तु आखिरत की मंज़िल (अगले जीवन) पर पहुंच कर कोई गार्ड साथ न दे सकेगा, जो यह मानता हो कि मुझे आखिरत तक जाना है, वह हर उस वस्तु को मूल्य रहित समझेगा, जिस का आखिरत में कोई मूल्य न हो, चाहे वह यहां कितनी ही मूल्यवान नज़र आये, इसी प्रकार वह उस हर वस्तु को महत्व देगा जिस

—हिन्दी इम्ला: हुसैन अहमद का आखिरत में महत्व होगा, चाहे इस संसार में उसका कोई महत्व न हो और हर उस चीज़ से दूर भागेगा जिससे आखिरत में हानि उठाना पड़े यह गन्ने निःशुल्क ले जाने में आखिरत में पकड़ होगी। इस उत्तर से गार्ड साहिब को बड़ी सीख मिली।



दीने इस्लाम

यह हैं दीने इस्लाम और उसके मिजाज की खास-खास बातें जो उसे दूसरे मज़ाहिब और फ़ल्सफ़ों से मुमताज़ करती हैं। एक मुसलमान को इनसे वाकिफ़ भी होना चाहिए और इनके बारे में उसके अन्दर ग़ैरत व हमीयत भी पाई जानी चाहिए। इसी की मदद से हम हर दौर में हक़ व बातिल की लड़ाई में सही रास्ते पर क़ायम भी रह सकते हैं और दीन की ख़िदमत व हिफ़ाज़त की सआदत भी हासिल कर सकते हैं।



सच्चा राही अक्तूबर 2016

नई पीढ़ी के निर्माण....

का स्थान दिलाने की आवाज़ लगा रहे हैं, तथा "अंतर्राष्ट्रीय माता दिवस" का लेबिल लगा कर नारी की सुरक्षा का दावा करते हैं।

खेद है इस जड़ता पर, पाश्चात्य जनों को चाहिए कि वह जीवन उस विधि पर गुजारें जो प्रकृति से मेल खाये और प्राकृतिक नियमों से लड़ना छोड़ दें, आकाशित जीवन व्यवस्था को अपनायें उसी में सफलता तथा शान्ति है, उसी को अपना कर मानवता की नाव सदैव तट पर लगी है, तथा समुद्री लहरों और थपेड़ों से सुरक्षित रह सकती है, अल्लाह की पुस्तक स्पष्ट घोषणा करती है।

अनुवाद: निःसन्देह जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है। फिर उस पर दृढ़तापूर्वक जमे रहे, उन पर फिरिश्ते उतरते हैं और कहते हैं कि न डरो और न शोकाकुल हो, और उस जन्नत की शुभ सूचना लो जिस का तुम से वादा किया गया है। (फुस्सिलत: 30)



ज़ियादा दूध-दही भी कर सकता है नुकसान

डेरी प्रॉडक्ट्स में प्रोटीन, विटामिन डी, कैल्शियम और पोटैशियम भरपूर होता है। अगर हम डेरी प्रॉडक्ट्स पूरी तरह बंद कर दें, तो बॉडी में इन न्यूट्रिएंट्स की कमी हो सकती है। लेकिन लगातार डेरी प्रॉडक्ट्स लेते रहने से भी शरीर को नुकसान हो सकता है। इससे शरीर में कब्ज, पेट फूलना, स्किन प्रॉब्लम्स जैसी कई समस्याएं हो सकती हैं।

दरअसल, डेरी प्रॉडक्ट्स खाने से शरीर में यूरिक एसिड बनता है, जिससे एसिडटी की समस्या होने लगती है। दूध, दही, पनीर, चीज, मावा जैसे डेरी प्रॉडक्ट्स आसानी से डाइजेस्ट भी नहीं होते। इसलिए इनसे इनडाइजेशन भी हो सकता है। अगर आपको डेरी प्रॉडक्ट्स के कारण समस्या हो रही है, तो थोड़े समय के लिए इन्हें खाना बंद कर देखें कि आपको क्या फायदे मिलते हैं।

ज़रा बच कर!

हेल्दी स्किन: डेरी प्रॉडक्ट्स से पिपल्स और एक्जिमा जैसी समस्या हो सकती है। इन्हें खाना बंद करने से स्किन डिस्जीज का खतरा टल जाएगा।

डाइजेशन: दूध में नेचुरल शुगर और लैक्टोस होता है, जो डाइजेशन धीमा करता है। इसे डाइट में हटाने पर कब्ज, गैस और पेट फूलने जैसी समस्या दूर हो जाती है।

एनर्जी: डेरी प्रॉडक्ट्स में ट्रिप्टोफेन होता है, जिससे थकान लगती है। इन्हें खाना बंद करने से शरीर का एनर्जी लेवल बना रहेगा।

अस्थमा: डेरी प्रॉडक्ट्स से कुछ लोगों को कफ की प्रॉब्लम हो जाती है। सांस की तकलीफ होने पर अस्थमा भी हो सकता है। जब सांस की परेशानी हो तो इसे अवॉइड करें।

वजन कम: स्टडी कहती है, डेरी प्रॉडक्ट्स जैसे चीज, पनीर खाने से वजन ज़ियादा बढ़ता है। इन्हें खाना बंद करने से वजन घटाने में मदद मिलती है।

दूध की एलर्जी: दूध की एलर्जी होने पर उल्टियां और पेट की बीमारियां हो सकती हैं। डेरी प्रॉडक्ट्स को ऐसे में अवॉइड करना चाहिए। ❖❖

नवभारत टाइम्स 17 अगस्त 2016 से ग्रहीत

बिस्मालत, ख़िलाफ़त और मुलूकीयत

—इदारा

रब के हैं प्यारे नबी हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा

रहमतें रब की उतरती रहती हैं उन पर सदा

सारे नबियों और रसूलों के हैं वह तो मुक़तदा।

पैरवी में उनकी है अब मुनहसिर रब की रिजा

उन पे जो कुआन उतरा वह तो रब का है कलाम

रब की मरजी के मुताबिक़ उन का होता हर कलाम

शुक्र है अल्लाह का कि उन की हम उम्मत में हैं

हम गुलाम उनके वह आका, रब की हम रहमत में हैं

बूबक़, उमर, उस्मां, अली ख़ामिस हसन इब्ने अली

पाँचों हैं ख़ुलफ़ा नबी के और हैं रब के वली

तीस बरसों की ख़िलाफ़त पर नबी का कौल है

जब हुई सुल्हे हसन पूरा हुआ यह कौल है

है मुलूकीयत श्री साबित जब नबी के कौल से

हक़ पे है आदिल मलिक फिर तो नबी के कौल से

मुआविया आदिल मलिक थे उन से राजी है ख़ुदा

वह तो कातिब थे वही के ऊँचा उन का मरतबा

जब हुई सुल्हे हसन वह हाकिमे बरहक़ हुए

उन के सारे कारनामों ख़ैरो बरक़त के रहे

हुब्बे अहले बैत हो हुब्बे सहाबा श्री रहे

है तकाजा दीन का कि हुब्ब इन् सब से रहे

रहमतें या रब नबी पर और हों लाखों सलाम

हुब्बे रब, हुब्बे नबी पर जिन्दगी हो यह तमाम

भारत देश

—इंदारा

सारे जगत में सबसे सुन्दर देश हमारा भारत देश
सारे जगत में सबसे अच्छा देश हमारा भारत देश
हिन्द कहो या हिन्दोस्तान, देश हमारा महा महान
हम हैं हिन्दी वतन है अपना प्यारा प्यारा भारत देश
रहें कहीं हम मन है रहता अपने प्यारे देश में
मन है मोहित वतन का अपने मोह का उदगम भारत देश
सिर पर मुकुट हिमालय का सिंहासन हिन्द महा सागर
बन उपवन पर्वत नदियों से अंलकृत यह भारत देश
गंगा यमुना जैसी नदियां बहती हैं इस देश में
गेहूँ, चावल, दाल, शकर उत्पादन कर्ता भारत देश
लोकतंत्रता, धर्म निर्पेक्षता और अहिंसा तीन स्तंभ
इन्हीं तीन पर स्थापित है देश हमारा भारत देश
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बौद्ध जैन हैं धर्म यहां
मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारे से सजा हुआ है भारत देश
ऊँच नीच और छुआ छूत की प्रथा यां अब रही नहीं
ज्ञान ध्यान विज्ञान में बढ़ कर विकसित होगा भारत देश
प्राण हमारा देश को अर्पित देश की रक्षा करने को
प्राण की यां परवाह नहीं है रहे सुरक्षित भारत देश
प्रेम भाव से रहें यहां सब यहां न आये कभी क्लेश
सदा शान्ति मय रहे देश यह अमर रहे यह भारत देश

वतन और ईमान

—इंदारा

भारत प्यारा देश हमारा
वतन हमारा भारत प्यारा
हिन्द कहो या हिन्दोस्तान
दोनों भारत की पहचान
अपने वतन से प्यार है हम को
अहले वतन से प्यार है हम को
रहे वतन की अपने आन
गो हो जाएं हम कुर्बान
लेकिन अपना है एलान
दुन्या वाले लें यह जान
वतन जो मांगे देंगे जान
पर न देंगे हम ईमान
अल्लाह है माबूद फ़क़त
अल्लाह है मस्जूद फ़क़त
नबी मुहम्मद उस के रसूल
नबी हैं आख़िर और रसूल
नबी पे अपने लाखों सलाम
रब की रहमत उन पे मुदाम
रहे वतन में अमनो अमान
और रहे साबित ईमान



उर्दू सीखिये

हिन्दी इबारात की मदद से उर्दू मिस्त्रे पढ़िये।

—इदारा

मगरूर क्यों है इतना नादान होश में आ

مغرور کیوں ہے اتنا نادان ہوش میں آ

कर ले यकीन दिल से तू खाक का है पुतला

کر لے یقین دل سے تو خاک کا ہے پتلا

यह हाथ पाँव तेरे तिनके का हैं सहारा

یہ ہاتھ پاؤں تیرے تنکے کا ہیں سہارا

देता है रिज़क तुझ को परवर दिगार तेरा

دیتا ہے رزق تجھ کو پروردگار تیرا

कर बन्दगी खुदा की, बन्दा है तू खुदा का

کر بندگی خدا کی بندہ ہے تو خدا کا

कर जवानी में इबादत काहिली अच्छी नहीं

کر جوانی میں عبادت کا ہلی اچھی نہیں

जब बुढ़ापा आ गया कुछ बात बन पड़ती नहीं

جب بڑھاپا آ گیا کچھ بات بن پڑتی نہیں

हाथ में और पांव में वह ज़ोर वह कूवत कहां

ہاتھ میں اور پاؤں میں وہ زور وہ قوت کہاں

नुत्क में वह बात बीनाई में वह ताकत कहां

نطق میں وہ بات بینائی میں وہ طاقت کہاں

है बुढ़ापा भी गनीमत गर जवानी हो चुकी

ہے بڑھاپا بھی غنیمت گر جوانی ہو چکی

यह बुढ़ापा भी न होगा मौत जिस दम आ गई

یہ بڑھاپا بھی نہ ہوگا موت جس دم آ گئی